

मानवता का गौरव

“दुनिया के हर इन्सान को गर्व करना चाहिये कि हमारे इन्सानों में एक ऐसा इन्सान पैदा हुआ जिससे इन्सानियत का सर ऊंचा और नाम रोशन हुआ। अगर आप (स०अ०) न आते तो दुनिया का नक्शा क्या होता। हम इन्सानियत की शराफ़त और महानता के लिये किसको प्रस्तुत करते? मुहम्मद (स०अ०) हर इन्सान के हैं, मुहम्मदुर्सूलुल्लाह (स०अ०) से इस दुनिया की रौनक और इन्यसान की महानता है। वो किसी कौम की जागीर नहीं, उन पर किसी देश का अधिकार नहीं, वो पूरी मानवता के लिये गर्व है, क्यों आज किसी देश का इन्सान गर्व व प्रसन्नता के साथ नहीं कहता कि मेरा इस मानवता से संबंध है जिसमें मुहम्मदुर्सूलुल्लाह (स०अ०) जैसा इन्सान पैदा हुआ।”

आज मानव का कौन सा वर्ग है जिस पर आपका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष एहसान नहीं। क्या मर्दों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनको मर्दानी और आदमियत की तालीम दी? क्या औरतों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनके अधिकार बताए? उनके लिये नसीहतें और वसीयतें फ़रमायीं। क्या कमज़ोरों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनकी हिमायत की? और फ़रमाया कि मज़्लूम की बदूआ से डरो कि उसके और खुदा के बीच कोई पर्दा नहीं। क्या ताकतवरों और शासकों पर आपका एहसान नहीं कि आपने उनको उनके अधिकार व कर्तव्य बताए? और न्याय करने वालों और खुदा से डरने वालों को खुशखबरी सुनाई। क्या व्यापारियों पर आपका एहसान नहीं कि आपने व्यापार करके उस वर्ग को सम्पादित किया? क्या आपका मज़ूदरों का एहसान नहीं कि आपने ताकीद फ़रमाई कि मज़्दूर की मज़दूरी पसीना सूखने से एहले दें दो? क्या जानवरों तक पर आपका एहसान नहीं कि आपने फ़रमाया हर वो प्राणिवर्ग जिसमें एहसास व जीवन है उसको आराम पहुंचाना और स्थिलाना पिलाना भी सदक़ा है? क्या सारी इन्सानी बिरादरी पर आपका एहसान नहीं कि गातों को उठ-उठ कर आप गवाही देते थे कि खुदा तेरे सब बन्दे भाई-भाई हैं। क्या सारी दुनिया पर आपका एहसान नहीं कि सबसे पहले दुनिया ने आप ही की जबान से सुना कि खुदा किसी देश, कौम, नस्ल व बिरादरी का नहीं सारे जहानों और सारे इन्सानों का है।

“हमारी आपकी दुनिया में शासक व दर्शनशास्त्री भी आये, साहित्यकार और कवि भी आये, विज्यी भी, राजनीतिज्ञ और धार्मिक मार्गदर्शक भी, वैज्ञानिक भी, मगर किसके आने से दुनिया में वो बहार आयी जो ऐग्रम्बरों के आने से, फिर सबसे अस्विर सबसे बड़े ऐग्रम्बर मुहम्मदर्सूलुल्लाह (स०अ०) के आने से आयी? कौन आपने साथ वो हरियाली, वो बरकतें, वो रहमतें, इन्सानों के लिये वो दौलतें, और मानवता के लिये वो नेमते लेकर आया जो मुहम्मदर्सूलुल्लाह (स०अ०) लेकर आये।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: २

फ़रवरी २०१२

वर्ष: ४



संरक्षक

हजरत मौलाना सैयद
मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष - दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मो० वाजेह रथीद हसनी नदवी
जनरल सेक्रेटरी- दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हाथ हसनी नदवी
मुफ्ती राथीद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुलाह नारबुदा नदवी
महम्मद हसन हसनी नदवी
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफीस रवॉ नदवी

पति अंक-१०० वार्षिक-१०००
समाजीय सदस्यता-५०००० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org

FAX-0535-2211188

E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

होश के नाखून लेने की आवश्यकता	2
बिलाल अब्दुल हाथ हसनी नदवी.....	2
बातचीत के आदाब	
मौलाना मुहम्मद मानी हसनी (रह).....	3
रसूल-ए-करीम (स०अ०)	
मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह).....	3
नबी अकास स०अ० की अच्छाइयां हर मुसलमान के लिये.....	
हज़ारत मौलाना सैयद मुहम्मद राबे हसनी नदवी.....	4
नबी स०अ० की आमद, जमाना जाहिलियत और वर्तमान युग	
मौलाना डाकटर मुहम्मदुर्रहमान आजमी नदवी.....	6
रसूल-ए-रहमत की शिक्षा की महत्ता एवं आवश्यकता	
मौलाना वाजेह रथीद हसनी नदवी.....	7
फ़िज़ाज़ी और सखावत के नमूने	
प्रो० सैयद मुहम्मद इजिबा नदवी.....	9
दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़	
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी.....	10
सीरत-ए-नबवी के आइने में हमारी तस्वीर	
मौलाना जाफ़र हसनी नदवी.....	11
किससा एक किसान और उसके बेटों का	
बिलाल अब्दुल हाथ हसनी नदवी.....	14
आपके दीनी सवालों और उनके जवाबों	15
नुकूश-ए-सीरत	
मुहम्मद सलामान खलीफा नदवी.....	16
जहेज़ एक लोनत	
अहसन अब्दुल हफ़्त नदवी.....	17
भारत के मुसलमानों की राजनीतिक समस्याएं एवं उनका हल	
मुहम्मद नफीस खाँ नदवी.....	19

मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली, यू०पी०.२२९००१

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफ्सेट प्रिन्सर्स, मरिज़िद के पीछे, फ़ाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, सेशर रोड रायबरेली से

छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण, मर्कजुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

होश के नारंगन लेने की आवश्यकता

बिलाल अब्दुल हायि हसनी नदवी

विदेश मंत्री कृष्ण के हाल के इस्साईल दौरे के बाद उनके बयान ने हर मानवता और इन्साफ़ पसन्द इन्सान के दिल में एक बे इत्मिनानी पैदा कर दी है। दुनिया के सबसे बड़े दहशतगर्द देश के साथ मिलकर दहशतगर्द ख़त्म करने के लिये प्लानिंग की जाए और दहशतगर्द को ख़त्म करने के लिये इसको ज़रूरी करार दिया जाए। जो कौम पूरे-पूरे देश को हज़म कर गयी हो, जिसने इन्सानियत का नंगा नाच नाचा हो, जहां औरतों और बच्चों पर जुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े गये हों, और फिर जिसका पूरा इतिहास मक्कारी से भरा हुआ हो, जिसको दसियों देशों ने आजिज़ होकर निकाला हो, जो दुनिया के इन्सानों को जानवरों का दर्जा देती हो और अपने आप को दुनिया के इन्सानों का आकासमझती हो, और जो अपने मिशन के लिये हर बुराई फैलाने के लिये तैयार हो, आप इस ज़ालिम और सबसे बड़ी दहशतगर्द क़ों से न्याय की आशा की जाए और उससे आतंकवाद को ख़त्म करने के लिये मदद की भीख मांगी जाए और वो भी उस देश की ओर से मांगी जाए जिसका अपना एक सुनहरा इतिहास हो और जिसने खुद दूसरे देशों और पीड़ित कौमों के लिये हमेशा आवाज़ उठाई हो।

भारत शुरू से फ़िलिस्तीन के हक़ में वहां के अरबों का साथ देता रहा है। यासिर अरफ़ात से भारत के गहरे संबंध रहे हैं और अपने—अपने दौर में विभिन्न प्रधानमंत्री वहां के पीड़ित वर्ग के साथ रहे हैं। मगर अफ़सोस की बात है कि मिस्टर राजीव गांधी के बाद जो पालिसी बदली गयी, शासनों के बदलाव के बावजूद फिर उस पालिसी पर शासन दोबारा लौट न सका। जो यहां के लिये गौरान्वित रही है। इस्साईल से जो संबंध स्थापित किये गये हैं उसमें बढ़ोत्तरी ही होती रही और अब हालत ये है कि शासन के मंत्री इस्साईल के दौरे को अपने लिये गर्व की बात समझते हैं।

ये इस देश के लिये सबसे बड़े ख़तरे की बात है। यहूदी कौम न किसी की वफ़ादार साबित हुई है और न उससे इसकी आस लगायी जा सकती है। अभी एक यहूदी अखबार के ताज़ा बयान ने इस मखौटे को उतार फेका है और उनके अन्दर की वास्तविकता इससे और अधिक स्पष्ट हो गयी है, वो अमरीका जो एक लम्बे अर्से से इस्साईल की पीठ पर हथरखे हुए है, और कितने अवसर पर उसने उजड़ते हुए यहूदियों को बसाया है। वर्तमान अमरीकी रा ट्रॉपति ओबामा भी इसी पालिसी पर चल रहे थे मगर उनकी किसी कार्यप्रणाली पर किसी विवाद के कारण यहूदी अखबार ने यहूदियों की खुफिया एजेंसी को उनके क़त्ल की राय दे लाली। इससे यहूदी मानसिकता का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि वो अपने साधारण से उद्देश्य को पाने के लिये कहां तक जा सकते हैं और ये सारी सच्चाईयां उनके प्रोटोकॉल में विघमान हैं।

देश के शुभचिन्तकों को इसके लिये बहुत अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता है। इस समय इस्साईल भारत में अपने मज़बूत क़दम जमाना चाहता है। इसकी विभिन्न एजेंसियां खुफिया तौर पर यहां काम कर रही हैं और अब तो सरेआम उनसे सौदेबाज़ी हो रही है। हर प्रकार के संबंध बढ़ाने के लिये उपाय किये जा रहे हैं। यहां की अर्थव्यवस्था और मीडिया पर उनका क़ब्ज़ा होता चला जा रहा है। अगर यही स्थिति जारी रही तो वो दिन ज़्यादा दूर नहीं कि यहूदी यहां आका बनकर हुकूमत कर रहे होंगे और यहां की आबादी उनकी गुलाम बनी हुई होगी। अमरीका की इस समय लगभग यही स्थिति है। उसके पहले कानून के निर्माता ने अमरीका का शासन संभालने वालों को उस समय ख़बरदार किया था। यहूदियों को यहां खुल्लम खुल्ला आबाद होने के अवसर उपलब्ध न कराए जाएं वरना एक दिन अमरीका उनकी गुलामी में चला जाएगा आज वो भवि यवाणी अपने एक—एक शब्द के साथ सही साबित हो रही है। कुछ यही स्थिति हमारे इस देश की है। अगर यहां भी वही बात दोहरायी गयी तो हाथ से सब कुछ निकल जाएगा। आवश्यकता है केवल शासक वर्ग के होश में आने की और इस देश की प्रकृति के अनुसार हर प्रकार के फ़िरकावारियत को छोड़ देने की और देश की उन्नति के लिये चिन्ता करने की और मंडराते हुए खतरों को समझने की और उससे मुकाबले के लिये तैयार होने की।

બાતચીત કે આવાજ

इन्सान की खूबियों का अन्दाज़ा बहुत कुछ बातचीत से हो जाता है। अगर कोई शख्स आपसे बात कर रहा हो तो आप आसानी से अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि ये शख्स उलझे हुए ख्यालात का है या सुलझे हुए ख्यालात का। ये संतुलित व्यवहार का है या गुस्सा करने वाला, और हसद करने वाला। ये ज्ञानी हैं या जाहिलों में इसकी गिनती है। इसलिये बातचीत की बड़ी अहमियत है। ज़बान और उसके शब्द इन्सानी विशेषताओं का आइना होते हैं।

1. बातचीत करने का सबसे पहला अद्वय है कि बातचीत नर्म शब्दों से हो। सख्त बात मुंह से निकालना पत्थर मारने के बराबर है। इससे सामने वाला बजाए लाभ उठाने के चिड़चिड़ा और ज़िददी हो जाता है। अल्लाह तआला ने खुद सरवर-ए-कायनात से फ़रमाया (अनुवाद: अपने बाजू नर्म कीजिए मौमिनों के लिये)

दूसरी जगह फरमाया: (अनुवाद: अगर आप सख्त बातचीत करने वाले और सख्त मिजाज होते तो ये लोग आपके पास से बिखर जाते)

खुद रसूलुल्लाह स०अ०ने उम्मत को हिदायत फरमायी कि नर्म ज़बान अपनायी जाए और खुद उस पर अमल किया। आपने किसी से भी सख्त लहजे में बात नहीं कि, बल्कि इस तरह बात करने वालों को ताकीद फरमायी है।

2. ठहर ठहर कर बात करना: बात इस तरह से की जाए कि सामने वाला समझ जाए। जल्दी जल्दी बात करना तहज़ीब के खिलाफ़ है। कई बहनों और भाइयों की आदत होती है कि वो एक ज़बान में सौ बातें कर जाते हैं। न खुद उनके पल्ले कुछ पढ़ता है न सुनने वाले के पल्ले। रसूलुल्लाह स०अ० किस तरह बात करते थे हज़रत आयशा रजि़ा की जबानी सुनिये! फरमाती हैं कि हज़रत स०अ० का बातचीत करने का अन्दाज़ बिल्कुल खुला खला होता था हर सुनने वाला बखूबी समझ जाता था।

3. किसी की बात काटना: किसी की बातचीत में बेवजह दखल देना भी ग़लत और बेवकूफी की बात है। काएदा ये है कि अगर कोई शब्द बात कर रहा है तो उसकी बात सुन कर फिर अपनी बात कहना चाहिये ताकि कहने वाले की बात भी आपकी समझ में आ जाए और अगर उसको कोई जवाब देना है या उसकी बात रद्द करनी है तो अच्छे ढंग से असरदार तरीके से ज़बान से अदा हो सके। ये बीमारी आम तौर पर औरतों में पायी जाती है कि एक के साथ कई-कई बोलने लगती हैं,



मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह0)

لقد	حاکم	رسول	من	انفسکم	عزیز	علیہ
بے ک	آبا یا تुہارے پاس	एک رسول	سے	تھوڑے نوچوس	بہت شاک ہے	ایس پر
ما	عنت	حریص	علیکم	بالمعنین سمائیں کے ساتھ	رُوف	رجیم رہنمایی مہرخان

ये आयत हुजूर (स०अ०) की तारीफ में हैं। لفظ
माने “बेशक तहकीक”, के माने भी “बेशक” के हैं। ये
दोनों शब्द बहुत अधिक प्रयोग होते हैं इसलिये इनको जहन में
रखना ज़रूरी है। इससे आगे बहुत मदद मिलेगी। جه کے مाने
“आया”, کم के माने “तुम्हारे पास”, من انسکم میں यानि “तुम ही मे
से” नफ्स और नुफ्स के माने सब जानते हैं। علیٰ के माने
“ऊपर” علیٰ के “उन के ऊपर”, علیٰ उर्दू में भी बोला जाता
है मतलब ये कि किसी बात का “बहुत ख्वाहिश मन्द” और
फिक्रमन्द” के माने “तुम” थे। علیٰ के साथ
जब کم आयेगा यानि علیکم तो उसके माने होंगे “तुम्हारे
ऊपर” روپ “शफीक”, رحیم “रहम करने वाला, مہرबान”
ज़बान सीखने के लिये शब्दों की मिलती जुलती शक्लों का
ख्याल बहुत ज़रूरी और लाभदायक होता है। जैसे यही
एक और علیکم इस प्रकार ज़रा से ध्यान से बहुत हद
तक माने इन्स्थाअल्लाह समझ में आने लगेंगे। ये एक बहुत
बड़ा गुण है। अगर इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा तो व्याकरण
का आधा काम हो जाएगा।

अब इसी आयत के माने पढ़ लीजिए ताकि अच्छी तरह जहन में बैठ जाएः

“बेशक आया तुम्हारे पास एक रसूल तुम्ही में से, उसको बहुत शाक (दुश्वार) है जो तुमको तकलीफ पहुंची हरीस (लालची) है तुम्हारी भलाई पर सभी ईमान गालों पर निहायत शफीक मेहरबान है”

શ્રેષ્ઠ : બાતચીત ફે આદાખ

जिसका नतीजा ये होता है कि किसी की बात किसी की समझ में नहीं आती और सबकी बातें शोर गुल में खो जाती हैं।

गरज ये कि बातचीत हो, या किसी की बात का जवाब, किसी चीज़ की तलकीन, या किसी की बात रद्द करना उपरोक्त आदाब का स्थाल ज़रूरी है और हिक्मत व नर्म बातचीत का लिहाज़ ज़रूरी है।

नबी अक्खर (स०अ०) की अच्छाइयां

ठृ मुस्लिमों के लिये अनुसरण योग्य उद्घरण

हज़रत मौ० सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मुहम्मदुर्सूलुल्लाह (स०अ०) को अल्लाह तआला ने केवल हिदायत देने वाला ही बनाकर ही नहीं भेजा था बल्कि उनको इन्सानियत व शराफ़त और ज़िन्दगी के लिये सलाह व भलाई व खूबियों का अच्छा नमूना बनाकर भेजा और ये कि इन्सानियत की सीधी राह व श्रेष्ठ स्तर पर लाने के लिये ऐसी कोशिशों के साथ जिससे इन्सानों को जानवरों जैसी बेलगाम ज़िन्दगी से निकाल कर इन्सानियत को ख़ेर व कामयाबी की ज़िन्दगी में दाखिल होने की राह मिली और इस समय दुनिया की अधिकतर खूबियाँ और फाएदे हुजूर (स०अ०) के दिये हुए मार्गदर्शन ही के परिणाम में प्राप्त हुए हैं। अल्लाह तआला ने इसी बुनियाद पर उनको रहमतुल लिल आलमीन की खूबी अता फरमाई, और उनकी पाक ज़िन्दगी को इन्सानी शराफ़त व खूबी का ऐसा नमूना बनाया जिसको अपनाने से ज़िन्दगी भी ठीक होती है, और परवरदिगार की रज़ामन्दी भी हासिल होती है। और जिसके नतीजे में दुनिया की ज़िन्दगी में की जाने वाली कोशिशों का सिला आखिरत में कामयाबी की सूरत में मिलेगा।

कुरआन मजीद में फरमाया गया: (अनुवाद: कि तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल में अच्छा नमूना है ये उस शख्स के लिये जो अल्लाह से उम्मीद कायम करता है और आखिरत में अल्लाह तआला की रहमत की उम्मीद करता है और उसने अल्लाह को बहुत याद किया है)

और फरमाया: (अनुवाद: कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा)

दुनिया की ये छोटी सी ज़िन्दगी गुज़र जाने के बाद आखिरत की जो ना ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी मिलेगी उसमें हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी के आमाल व काम, वहां जज़ा व सज़ा के फैसले के लिये तौले जाएंगे, उनमें वज़न अल्लाह के हुक्म की तामील का देखा जाएगा, और उसके हुक्मों की तामील उसके रसूल (स०अ०) के बताए हुए तरीकों पर चलने के लिहाज़ से देखी जाएंगी। हमारी ज़िन्दगी, हमारे काम, हम रसूल के नमूने से जिस हद तक करीब या मुताबिक होंगे, उसी के बराबर हमको आखिरत में कामयाबी और राहत मिलेगी।

अल्लाह के रसूल (स०अ०) से मुहब्बत और उनके अमल व अख़लाक को अपनी ज़िन्दगी के लिये नमूना बनाना ही

अल्लाह तआला से मुहब्बत और इताअत का ज़ारिया करार दिया गया है। और किसी से मुहब्बत सच्ची उस समय मानी जाती है जब महबूब की हर बात अच्छी लगती हो और मुहब्बत करने वाला उसकी नक़ल की कोशिश करता हो, वरना वो मुहब्बत केवल मुहब्बत का दावा है जिसको सच्चा नहीं समझा जाता।

हम मुसलमानों को अपनी—अपनी ज़िन्दगी का जाएज़ा लेते रहना चाहिये कि हम अल्लाह के रसूल (स०अ०) से वास्तव में मुहब्बत करते हैं या हमको शैतान धोखा दे रहा है। और शैतान ऐसा करता है कि वो इन्सान की नफ़्स के अन्दर घुसकर उसको बहकाता है और इन्सान का नफ़्س जब बहक जाता है तो इन्सान का सारा अमल बहक जाता है, चाहे उसको ये धोखा दिया गया हो कि तुम्हारा अमल नहीं बहका।

अल्लाह तआला ने अपने रसूल (स०अ०) की इन्सानी ज़िन्दगी को अलग—अलग हालात से गुज़ारवाया है। ग्रीष्मी से, अमीरी से, दोस्तियों से, दुश्मनियों से, ज़ंग के हालात से, खुशी के हालात से, गम के हालात से, औलाद के पैदा होने की खुशी से, और औलाद के ख़त्म हो जाने के गम से, ऐसे हालात जिनसे शुक्र करने का ज़ज्बा पैदा हो, ऐसे हालात जिनसे सब्र की ज़रूरत होती हो, गुस्सा दिलाने वाले हालात से जिनमें अल्लाह के रसूल (स०अ०) अगर अल्लाह के हुक्म और रज़ा के मुखालिफ़ मामला होता तो गुस्सा करते और अगर केवल अपनी जात की बात होती तो सब्र करते और नज़रअन्दाज़ कर देते थे।

हुजूर (स०अ०) ने अपनी ज़िन्दगी के आखिरी हिस्से में एक बार फरमाया कि भाइयों! अगर किसी को मुझ से कोई तकलीफ़ पहुंची हो तो या माफ़ कर दे या उसका बदला ले ले। कथामत के लिये उसे बाकी न रखे वहां का बोझ मैं नहीं उठाना चाहता, तो एक सहाबी ने अर्ज़ किया कि एक बार आपने सवारी की तरफ़ कोड़ा हिलाया था मैं करीब मैं था मेरी पीठ पर लग गया था। आप (स०अ०) ने ये सुनकर बुरा नहीं माना बल्कि अपनी पीठ खोल दी और कहा इन्तिकाम ले लो ताकि यहां की बात यहीं ख़त्म हो जाए। सहाबी तो सहाबी थे नियत इन्तिकाम की कहां हो सकती थी, बढ़ कर पीठ को चूम लिया और कहा अस्ल में मैं यहीं चाहता था। देखिये रसूल (स०अ०) का किरदार ये भी नहीं सोचा कि एक उम्मीदी अपने रसूल से इन्तिकाम ले लेगा और एक ऐसी मामूली बात पर जो बिला इरादा हो गयी

थी। आपने नापसन्दीदगी का ज़रा भी इज़्हार नहीं किया बल्कि इन्तिकाम देने को तैयार हो गये। दूसरी तरफ सहाबी का किरदार कि इन्तिकाम की नियत ही न थी केवल मुहब्बत के इज़्हार के लिये पीठ खुलवाना और उसको चूम लेना उद्देश्य था। हुजूर अपने बचपने से ही कठिन परिस्थितियों से गुज़रे बल्कि अस्त्व में उनको इन हालात से गुज़रवाया गया ताकि हर तरह के हालात के लिये नमूना बनें।

आप (स0अ0) शुरू ज़िन्दगी में ही ग़रीबी और बेचारगी के हालात से गुज़रे कि वालिद साहब का इन्तिकाल आप के पैदा होने से पहले ही हो गया। आप (स0अ0) पैदा हुए तो यतीमी की हालत में पैदा हुए, बाप का साया नहीं मां ग़मज़दा और बेसहारा, फिर वालिदा का इन्तिकाल भी अभी आप (स0अ0) बिल्कुल बच्चे थे कि हो गया। दादा जिन्होंने बाप की जगह ले ली थी वो भी आप (स0अ0) बिल्कुल कम उम्र में थे कि इन्तिकाल कर गये। आप (स0अ0) के सरपरस्त केवल चचा रह गये थे जिनके खुद कई बेटे थे। आमदनी बहुत कम थी, गुज़ारा मुश्किल से होता था, ये सब कठिनाइयां आप (स0अ0) ने जवानी के शुरूआत में ही बर्दाश्त कीं, और उसके बाद भी सब्र व संजीदगी और नेकी का स्तर कायम कर दिया कि कुरैश ने सादिक और अमीन का खिताब दिया कि निहायत सच्चे, ईमानदार नौजवान हैं, फिर अल्लाह ने खुशहाली और परेशानियों से छुटकारा भी अता फ़रमाया कि जवान होकर आप व्यापार और कारोबार में शामिल हुए और खुशहाली मिली। इसमें आप (स0अ0) संजीदगी, सखावत और ग़रीब लोगों की मदद की विशेषता से परिपूर्ण रहे और अपने रब का शुक्र अदा करते रहे। फिर जब नबी करार दिये गये और आप (स0अ0) ने दीन की दावत का काम शुरू किया तो विरोधों से पाला पड़ा बल्कि सख्त ज्यादतियां की जाने लगीं। आप (स0अ0) पर गन्दगी तक डाली गयी। लेकिन आप (स0अ0) ने कभी उसका बदला नहीं लिया और न विरोध करने वालों पर गुस्सा किया। बस अपने परवरदिगार से दुआ करते रहे। मक्का वालों ने जब बहुत परेशान किया तो ताएँ गये वहां जाकर दावत दी वहां के लोगों ने बहुत तकलीफ़ दीं, जिस लहूलुहान हो गया यहां तक कि अल्लाह तआला की रहमत जोश में आ गयी। फ़रिश्तों को भेजा कि पूछो कि आप चाहें तो अभी उन लोगों पर अज़ाब ले आया जाए, आप (स0अ0) ने फ़रमाया नहीं, ये लोग नहीं तो शायद उनकी बाद में आने वाली औलाद अच्छा बर्ताव करे। मैं तो केवल अपने रब की रज़ा चाहता हूं। वो अगर मुझसे नाराज़ नहीं तो मुझे किसी बात का गम नहीं। मदीने में मुनाफ़िकीन ने इतना परेशान किया कि बर्दाश्त से बाहर होने लगता, लेकिन आप (स0अ0) बराबर अच्छे स्वभाव

को प्रकट करते रहे और उनका बर्ताव रब के सुपर्द करते रहे। आप (स0अ0) की खूबियों की चर्चा करने वाले कहते हैं कि आप (स0अ0) ने कभी किसी को मारा नहीं न घर के किसी व्यक्ति को न नौकर को। आप किसी पर गुस्सा नहीं करते थे, हां अगर हक के खिलाफ़ कोई बात की जाती तो आप (स0अ0) को बेहद गुस्सा आ जाता। महफिल में आते तो किसी को हटाते नहीं और न बीच में घुस कर बैठते, जहां जगह होती वहीं बैठ जाते, ये बात और थी कि फिर वही जगह महफिल का केन्द्र बन जाती। मुलाकात करने वाला अगर दूर से आया होता और अजनबी होता तो उसकी बात सब्र के साथ सुनते और पूरी बात करने देते और हमदर्दी का जवाब देते। कभी कोई भिखारी इस तरह मांगता की परेशान कर देता लेकिन आप (स0अ0) केवल नर्म बात कहते कि इस समय हमारे पास देने को कुछ नहीं है अगर होता तो दे देते, और अगर आप (स0अ0) के पास होता तो मांगने वाले को अपनी बड़ी से बड़ी चीज़ देते और फ़रमाते कि मैं कंजूस नहीं हूं।

हर समय अपने रब की नाराज़गी से डरते रहते। ज़रा तेज़ हवा चलती तो डरते कि कहीं अल्लाह की पकड़ और अज़ाब तो नहीं। फौरन अस्तग़फ़ार करते, नमाज़ पढ़ते और अल्लाह की रज़ा चाहते, अल्लाह की इबादत में रात का बड़ा हिस्सा गुज़ार देते कि पैरों में सूजन आ जाती और जब कहने वाला कहता कि आप इतनी मेहनत क्यों करते हैं आप के तो अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हैं तो फ़रमाते कि क्या मैं अपने परवरदिगार का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनू। इस तरह हमारे हुजूर (स0अ0) ने नरम—गरम हर तरह के हालात का सामना किया और ईमान वालों के लिये सब्र व शुक्र का बेहतरीन नमूना पेश कर दिया। इबादत में और अपने परवरदिगार की खुशनूदी हासिल करने में श्रेष्ठ स्तर स्थापित कर दिया। इन्सानों के साथ हमदर्दी और अच्छे बर्ताव का शानदार नमूना—ए—नबवी कायम कर दिया।

और हम सब इन्सानों को हमारे परवरदिगार ने हुक्म दिया कि इस अज़ीम और रहमतुल लिल आलमीन रसूल की पैरवी पूरी तरह से करें कि इसमें हमारी कामयाबी और निजात है। और हमको इसका हिसाब आखिरत में अपने परवरदिगार के सामने देना है कि इसके लिये हमारी दुनिया की ज़िन्दगी को अमल का मैदान बताया गया है। इसी में हमको अपने अमल से साबित करना है कि हमको अपने परवरदिगार से मुहब्बत है या नहीं। हम उसकी रज़ा चाहते हैं या नहीं, और जबकि उसके लिये उसके आखिरी रसूल मुहम्मद (स0अ0) की पैरवी करेंगे और उनकी ज़िन्दगी की नक़ल करेंगे और उनसे मुहब्बत का सही सुबूत देंगे। अल्लाह तआला तौफ़ीक अता फ़रमाये। आमीन

नवी स०अ० की आमद

ज़माना जाहिलियत और वर्तमान युग

मौलाना डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

छठी सदी ईसवी और बीसवी सदी ईसवी की जाहिलियत और वर्तमान युग के इन्सान की स्थिति छठी और सातवीं सदी ईसवी के इन्सानों की हालत से किस कदर मेल खाती नज़र आती है। वो हालत जो नवी करीम स०अ० के आने से पहले थी। सामूहिक रूप से दोनों जाहिलियत के दौर हैं। यद्यपि पहली जाहिलियत यूनानी और ईरानी सभ्यता के साथे में परवान चढ़ रही थी और उस समय की बाग़ड़ोर कबीले और नस्ली पक्षपात के हाथों में थी। और अदावतें, रंजिशें, आपसी नफरत, क़त्ल व ग़ारत गरी इसके लिये ईंधन उपलब्ध कराने का साधन बनीं। और वर्तमान जाहिलियत का मार्गदर्शन भौतिकवादी दर्शनशास्त्र, खोटे दृष्टिकोण, ओछे स्तर कर रहे हैं, और कीना व दुश्मनी, और जलन इसकी खाद्य सामग्री का काम करते हैं और क्षेत्रीय, कौमी, नस्ली, सभ्यता की अस्वियत, और रंग व नस्ल के विभिन्न वर्गों में आधारित कबीला परस्ती अपने दायरे में लिये हुए हैं। इस्लाम के आने के पहले जाहिलियत कबीलों के प्रदर्शन, बाज़ारों और मेलों, ज़ंगों और सूरमाओं पर फ़ख़ करती थी तो आज की जाहिलियत अज़ीमुश्शान शहरों, अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंसों, एटमी हथियारों की फैक्ट्री, कला के माहिर, साइंटिस्टों पर नाज़ करती है, पिछली जाहिलियत बच्चियों को ज़िन्दा ग़ा़ देने की थी, और तो का अपमान, मां की ममता पर पाबन्दी लगाने, खानदानी दायरे को तंग करने में आगे आगे थी। तो इस ज़माने की जाहिलियत के नुमाइन्दे देश परिवार नियोजन और औरतों को बेक़ीमत और बेहैसियत बनाकर पेश करने, आज़ादाना और अनुचित रूप लैंगिक इच्छाओं की पूर्ति करने की हौसलाअफ़ज़ाई करते हैं। और उन लोगों के लिये कीमती ईनामों के विज्ञापन देते हैं जो परिवार नियोजन के नियम बनाते हैं और एक बच्चे और एक बच्ची की पैदाइश पर संतोष करते हैं।

इस तरह के और भी बहुत से पहलू हैं जिसमें दोनों जाहिलियत के रोल एकसमान नज़र आते हैं। पुराने ज़माने

में जाहिलियत अपने शुरूआती चक्र में जब हद से गुजर गयी और सारी सीमाएँ तोड़ दी गयी और विभिन्न इन्सानी समाज में इसका सिक्का चलने लगा तो क़रीब था कि इन्सान इन्सानी विशेषता से कट जाए। उस समय पूरी मानवता तबाही के कगार पर खड़ी थी और दुनिया का ख़ात्मा बहुत क़रीब नज़र आ रहा था। और पूरी दुनिया अपनी सभ्यता और संस्कृति और कारोबार समेत इतिहास के पन्ने से मिटने को थी कि अल्लाह तआला ने उस हैरतअन्ज़ सूरते हाल और बहुत ही कठिन मौके पर इसी दुनिया के बचाव और उसको जाहिलियत और बदबूज़ी के अन्धेरों से निकाल कर ईमान के नूर और खुशनसीबी की राह पर लाने का फ़ैसला किया। और हुजूर—ए—अकरम स०अ० को एक अनमोल पैग़ाम देकर भेजा जिसने तबाही के द्वार पर खड़े होश गवाए हुए इन्सानों की दस्तगीरी फरमायी। और वास्तविक जीवन और अमन व सलामती के कुशादा मैदान में इसको उतार दिया। आप एक नई दावत लेकर तशीफ लाये जिसने दिलों को खुदा पर विश्वास और उसके एक होने पर ईमान के भाव से भर दिया। नवी—ए—करीम स०अ० ने उस दौर के इन्सान के सामने खुदा का पैग़ाम पेश किया और अल्लाह की आयतें तिलावत फरमायीं और शिर्क व जिहालत से उसको पाक कर दिया। और अल्लाह की किताब और अल्लाह के आदेश के बारे में बताया। हिदायत के नूर को फैलाने, फ़ज़ाएल और अच्छे बर्ताव को आम करने, छोटी—छोटी बातों और तुच्छ उद्देश्यों की प्राप्ति से रोका। लोगों को गुमराही और अन्धेरों से नजात दिलाकर सही राह पर लाने और हक के नूर से परिचित कराने के लिये हर प्रकार की तकलीफ़ बर्दाश्त की।

(वही ज़ात है जिसने नाखुवान्दा लोगों में उन्हीं में से एक पैग़म्बर चुन कर भेजा जो उनके सामने उसकी आयतों की तिलावत, और उनको गन्दिगयों से पाक रहने और किताब व हुक्म की तालीम देते थे और उसके आने से पहले वो सब खुली गुमराही में थे) (१० अपेज़: 13 पर)

उस्तुले-ए-रहमत (स०अ०)

की शिक्षा की महत्वा एवं आवश्यकता

मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

शिक्षा के इतिहास में इससे बड़ी ग़लतबयानी, दुष्प्रचार, और गुमराह करने वाले रवैये का उदाहरण मिलना मुश्किल है। जितना झूठ एवं दुष्प्रचार सीरत पाक के सिलसिले में पश्चिम के ज्ञानियों के लेखों में मिलता है, ये बात तो उस समय समझ से बाहर है जब ज्ञान स्वतन्त्र न था और इल्म पर कलीसा के गहरे रंगीन परदे पड़े हुए थे। लेकिन कलीसा से स्वतन्त्र होने के बाद ज्ञान का ये पक्षपात और कलीसा से बग़वत के बाद नबी-ए-इस्लाम और इस्लाम के बारे में इस कलीसाइयत का प्रदर्शन ज्ञानियों के अविष्कारों एवं अध्ययन के विषयों को शंकित कर देती है।

अचम्भे की बात ये कि खोजी जो अपने ज्ञान व खोज के काम में निपुण समझे जाते हैं और बात बहुत नाप तौल कर कहते हैं और बड़ी गहराई तक जाते हैं वो भी जब सीरत पाक, कुरआन करीम, हदीस-ए-नबवी या इस्लामी विषयों पर आते हैं तो पता चलता है कि उनको सलीबियत या यहूदियत का ज़बरदस्त करन्त लगा है और वो होश व हवास खो बैठे और बेकार बातें जो खुद उनके बनाए हुए उस्तूलों या नियमों के विपरीत हैं, उनकी क़लम से निकल गयीं और कुछ अपनी इस भावना को प्रकट भी कर बैठे हैं। और कष्ट पहुंचाने के जाएँ ज़हने की दलील भी ज्ञान के क्षेत्र से प्रस्तुत करते हैं।

इन दुष्प्रचारों में एक रसूल अकरम (स०अ०) के बारे में जनी मिजाज का दावा है, जो रसूल-ए-पाक (स०अ०) की सीरत की उल्टी तस्वीर है। ये ज्ञानी रसूल-ए-रहमत को रसूल-ए-तलवार की हैसियत से पेश करते हैं। और कुरआन करीम को कट्टरवाद सिखाने वाली एक किताब घोषित करते हैं। इस बात को यूरोप के ज्ञानी इस ताकत से दोहराते रहते हैं कि वो रसूलुल्लाह (स०अ०) की विशेषता समझ में आती है। लेकिन जब इससे प्रभावित होने वाले सीरत पाक और कुरआन मजीद

का अध्ययन करते हैं तो ये ग़लतबयानी, दुष्प्रचार और शरअंगेज़ी खुल जाती है और वो इस वास्तविकता को स्वीकार करने पर मजबूर हो जाते हैं कि वो इस्लाम और रसूलुल्लाह (स०अ०) के बारे में जो कुछ जानते थे वो केवल प्रोपगन्डा था और वो इस्लाम कुबूल करने में किसी तरह का आर महसूस नहीं करते। इसकी बहुत सी मिसालें इसी ज़माने में सामने आ रही हैं। अख़बार से मालूम होता है कि डेनमार्क और हालैण्ड में “रसूलुल्लाह और कुरआन” जो तहरीक चली और उसकी वास्तविकता जानने के लिये ईसाईयों ने कुरआन और आप (स०अ०) की जीवनी का अध्ययन किया उसके परिणाम में कई हज़ार ईसाई मुसलमान हो गये।

वास्तविकता ये है कि रसूल पाक (स०अ०) के जीवन में जंग और बदला या कट्टरवाद की कार्यवाही का मुकाबला किया जाए तो मुहब्त अमन और सरिखियों और तकलीफों को झेलने और ज्यादती करने वालों को माफ करने के उदाहरण अधिक नज़र आयेंगे और वही इसकी आधारभूत विशेषता लगेगी। खुद आप (स०अ०) ने फ़रमाया (मैं अच्छे अख़लाक के लिये भेजा गया हूँ)

कुरआन-ए-करीम ने आप (स०अ०) को “सारे जहां के लिये रहमत” के लक़ब से याद किया और ये आपकी सबसे बड़ी विशेषता बतायी। वो कहता है: (अनुवाद: फिर ये अल्लाह की रहमत ही की वजह से है कि आप उनके साथ नर्म रहे। और अगर आप सख़त तवियत के होते तो वो लोग आपके पास से बिखर गये होते, सो आप उनसे दरगुज़र कर दीजिए, और उनको माफ़ कर दीजिए, और उनसे मामलों में मशिवरा लेते रहिये, लेकिन जब आप पुख्ता इरादा कर लें तो फिर अल्लाह पर भरोसा रखिये, बेशक अल्लाह उनसे मुहब्त रखता है जो उस पर भरोसा रखते हैं)

इसी तरह आपकी मजलिस के बारे में त्याग व कुर्बानी, व रहमदिली की विशेषता बयान की: (अनुवाद: वो



अल्लाह ही तो है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत व सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसके तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और अल्लाह काफ़ी गवाह है मुहम्मद (स0अ0) अल्लाह के पैगम्बर हैं और जो लोग उनके साथ हैं तो तेज़ काफिर के मुकाबले में, (और) मेहरबान हैं आपस में, तो उन्हें देखेंगा (ऐ मुख़ातब) कि (कभी) रुकु कर रहे हैं, कभी सजदा कर रहे हैं, अल्लाह के फ़ज्ल और रज़ामन्दी की जुस्तुजू में लगे हुए हैं, उनके आसार सजदे की तासीर से उनके चेहरों पर नुमायां हैं, ये उनकी विशेषताएं तौरेत में हैं और इन्जील में उनकी विशेषता ये है कि खेती की उसने अपनी सुई निकाली, फिर उसने अपनी सुई को बढ़ाया, फिर और मोटी हुई, फिर अपने तना पर सीधी खड़ी हो गयी कि किसानों को भी भली—भली मालूम होने लगी ये बढ़ोत्तरी सहाबा को इस वजह से दिया ताकि काफिरों को उनसे जलाए और अल्लाह ने उनसे जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक काम किये मग़फिरत और बहुत बड़े सवाब का वादा किया है)

इस रहम दिली की सबसे बड़ी मिसाल मक्का की जीत के समय रसूल—ए—अकरम (स0अ0) का ऐलान है। इस शहर में जहां कोई जुल्म व ज़्यादती ऐसी नहीं है जो उस पाक जात पर जिसको सादिक व अमीन कहते थे न की गयी हो। इस शहर के लोगों ने उन पर जंग भी थोपी, उनके ख़िलाफ़ साज़िशें भी कीं, उसके फ़तेह होने पर ये कहा गया: (आज का दिन रहमत का दिन है) और जिसने सबसे ज़्यादा दुश्मनी की उसके बारे में कहा गया: (जो इसके घर में पनाह ले वो महफूज़ है) उसके बाद सबको माफ़ करने का ऐलान, ऐसी विजय और ऐसे विजयी का इतिहास में उदाहरण नहीं मिल सकता, वो वास्तव में सारे जहान के लिये रहमत थे।

ताएँ वालों ने जैसा कष्ट पहुंचाया लेकिन जब फ़रिश्ते ने अज़ाब की बात की तो आप (स0अ0) ने मना फ़रमा दिया और कहा कि “उनकी औलाद हो सकता है कि हक़ कुबूल कर ले”

ज़गी के इतिहास और खुद इस दौर में इसाईयों के अधिपत्य का इतिहास, विजयी क़ौम के साथ सख्त इन्तिकाम और ख़ुरेज़ी रवैया की है रोमियो ने ऐसा किया तो पुरानी बात है, लेकिन खुद रसूलुल्लाह (स0अ0) पर इल्ज़ाम लगाने वालों ने अपनी जीत के मौके पर विरोधी क़ौमों के साथ सलीब के साथे में क्या किया? वो खुद उनके

इतिहास में सुरक्षित है। उन्नीसवीं, बीसवीं और इक्कीसवीं सदी में इन सभ्यता और मानवता का दम भरने वालों ने जो किया वो किसी से छिपा नहीं है और इस दौर में जो कट्टर वाद और जुल्म व ज़्यादती की कार्यवाहियां दुनिया के विभिन्न हिस्सों में हो रही हैं, वो इसका सबसे बड़ा सुबूत हैं, और कलीसा की इस पर ख़ामोशी सबसे बड़ी दलील है।

उस जात के बारे में जो अधिपत्य के समय, ताक़त के समय, ताक़त के प्रयोग के बजाए दरगुज़र व माफ़ी का रवैया अपनाती है, जो नौकरों तक से तेज़ आवाज़ में बात न करे, जो जानवरों तक के बारे में रहम का मामला करने का हुक्म दे, उसके बारे में इल्म के इन दावेदारों की खोज उनके इल्म का पोल खोल दे देती हैं। और उनके विषय के दावे के खोखले पन को जाहिर कर देती हैं।

मुसलमान लेखकों से गलती ये हुई कि सीरत पाक के विख्यात तथ्यों को उस व्याख्या से नहीं प्रस्तुत किया, बल्कि अपने अधिपत्य के युग में अपनी विजयों और ज़ंगी कार्यवाहियों को अधिक व्याख्या के साथ बयान किया। और इस्लाही व इन्सानी ख़िदमत को इस तफ़सील से नहीं बयान किया जिसकी आवश्यकता थी, इस तरह सीरत पाक को विभिन्न भाषाओं में व्याख्या सहित प्रस्तुत नहीं किया, सीरत के रहम, मुहब्बत, इन्सानियत, व्यक्तिगत विशेषताएं सामाजिक विशेषताओं को पेश किया जाता और इस्लाम के नतीजे में इल्म व फ़न, और सभ्यता को जो लाभ हुआ उसको विभिन्न भाषाओं में प्रस्तुत किया जाता तो ये ज़ालिमाना रवैया नहीं अपनाया जाता।

अब जबकि फिर यूरोप से आंधियां उठने लगी हैं और वो विषय फिर बलपूर्वक प्रस्तुत किया जाने लगा है, आवश्यकता है कि सीरत पाक को इस रंग में पेश किया जाए कि वो इन्सानियत के लिये इस मानवता के लिये इस युग में किस प्रकार निजात का साधन बन सकती है, और मानवता इससे किस प्रकार जागरूक हो सकती है। इस युग में जिसमें क़ौमी, क्षेत्रीय, और नस्ली पक्षपात और ज्ञान का ग़लत प्रयोग और अपने क़ौमी लाभ के लिये दूसरों पर जुल्म व ज़्यादती का माहौल बनाया जा रहा है। रसूल—ए—अकरम (स0अ0) के इस पैगाम को आम करने में ही निजात है कि “सब आदम की औलाद हैं और आदम मिट्टी से बने हैं, अरबी को अज़मी पर श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, श्रेष्ठता का आधार केवल खुदा का ख़ौफ़ है”

જુદ્યાની શ્રીરાખાબતાલોનીના

इस्लामी इतिहास सखावत के नमूनों से भरा हुआ है। इस्लाम का श्रेष्ठ गुण ये भी है कि वो दूसरों पर खर्च करने, ग्रीष्मों और बेसहारा लोगों की मदद करने, पड़ोसियों और रिश्तेदारों का सहयोग करने का हुक्म देता है। मुसलमानों ने इन अधिकारों को अदा करने के सिलसिले में ऐसी पिसालें पेश कीं कि जिसका उदाहरण किसी और कौम में मिलना मुश्किल है। उन्होंने कई बार अपने भाइयों और ज़रूरतमन्द लोगों की ज़रूरतों को पूरा किया है और खुद सब्र किया परेशानी उठाई और तकलीफ बर्दाश्त की है जिसकी तरफ कुरआन ने इशारा किया:

(अनुवाद: और उन लोगों का यही हक है जो राजधानी यानि मदीना में उन मुहाजिरीन के आने के पहले से कशर पकड़े हुए हैं जो उनके पास हिजरत करके आता है। उससे ये लोग मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ मिलता है उससे ये अन्सार अपने दिलों में रक्षण नहीं करते और अपने से मुकद्दम रखते हैं जबकि उन पर फ़ाका ही हो, और वाकई जो व्यक्ति अपने को कन्जूसी से बजाए रखेगा ऐसे ही लोग फ़्लाह पाने वाले हैं)

दीन की इन सारी विशेषताओं में नवी अकरम स030 सबसे श्रेष्ठ थे। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 फ़रमाते हैं कि हुजूर स030 सबसे ज्यादा सखी थे। मगर जो फ़कीराना ज़िन्दगी बसर करते थे दादो दहिश में बादशाहों को शर्मिन्दा करते थे। एक बार इन्तहाई ज़रूरत के बक्त एक खातून ने चादर पेश की और आप स030 ने उसे ओढ़ लिया। उसी समय एक व्यक्ति आया और उसने आप स030 से कुछ ओढ़ने के लिये मांगा, आप स030 ने चादर उतार कर उसको दे दी। कर्ज़ लेकर ज़रूरत मन्दों की ज़रूरत पूरी करते खास तौर से रमजानुल मुबारक के आखिरी दिनों में बहुत ही फ़ख्याज़ी फ़रमाते और इस महीने में जब हजरत जिबराईल अलै0 तशीरीफ़ लाते और आप से कलाम—ए—मजीद का दौर करते तो उस समय आप स030 भलाई और लाभ पहुंचाने वाली बारिश और तेज़ हवा से भी ज्यादा सखावत फ़रमाते। तिरमिज़ी की रिवायत है कि एक बार हुजूर अकरम स030 की खिदमत में किसी ने नब्बे हजार दिरहम पेश किये। आप

स030 ने उसी समय सब बंटवा दिये। दिरहम बंट जाने के बाद एक भिखारी आया हुजूर स030 ने फ़रमाया अब तो मेरे पास कुछ रहा नहीं, तुम मेरे नाम से कर्ज़ ले लो जब मेरे पास होगा मैं अदा कर दूंगा। हजरत जाबिर रज़ि0 ने बयान किया कि ऐसा कभी न हुआ हुजूर स030 से कुछ मांगा गया हो और आपने मना फ़रमा दिया हो। हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स030 ने हजरत अबूज़र ग़फ़्फारी रज़ि0 से फ़रमाया कि: ऐ अबूज़र! मुझे ये बात पसन्द नहीं कि मेरे पास ओहद पहाड़ के बराबर सोना हो, और तीसरे दिन तक उसमें से मेरे पास एक अशर्फ़ी भी बच जाए, केवल कर्ज़ की अदाएँी के लिये रह सकती है। तो ऐ अबूज़र! मैं इस माल को दोनों हाथों से खुदा की मख़लूक में बांट के उठूंगा। एक रोज़ रसूलुल्लाह स030 को छः अशर्फ़ियां मिलीं। आपने चार ख़र्च कर दों और दो बच गर्यां उनकी वजह से आपको पूरी रात नींद न आयी। उम्मुल मोमीनीन हजरत आयशा रज़ि0 ने अर्ज़ किया ये तो मामूली सी बात है, सुबह ख़ेरात कर दीजिएगा, आपने फ़रमाया: ऐ हमीरा (ये हजरत आयशा का लक़ब था) क्या पता मैं सुबह तक ज़िन्दा रहूं या नहीं?

सीरत—ए—नबवी में इस जैसे बेशमार वाक्ये हैं, उन्हीं को पेश—ए—नज़र रख कर और उसी नमूने को अपना कर सहाबा किराम रज़ि0 ने भी बड़ी फ़ख्याजाना ज़िन्दगी गुज़ारी। ज़रूरत मन्द की ज़रूरत पूरी की और किसी भी मांगने वाले को कभी न लौटाया चाहे खुद को फ़ाका करना पड़ा हो। हजरत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के पास हिजरत से पहले मक्का मुकर्रमा में चालीस हज़ार दिरहम थे। आपने मुसलमानों पर पूरी रकम ख़र्च कर दी। जब हिजरत की तो उनके बालिद अबू फ़हाफ़ा ने साहबजादी हजरत असमा से पूछा कि अबूबक्र ने तो सारी रकम ख़र्च कर दी, हजरत असमा ने रकम रखने की जगह पर कुछ पथर रखकर अपने अंधे दादा का हाथ पकड़ा और उस जगह रखकर बताया कि देखिये सबकुछ तो है। उन्हे इत्मिनान हो गया। तबूक की जंग के मौके पर बहुत ही सबक़ लेने वाले वाक्ये पेश आये।

दुनिया की मुहब्बत

हदीस में है कि “दुनिया की मुहब्बत हर बुराई की जड़ है” अस्ल मसला ये है कि दुनिया की मुहब्बत निकल जाए। दुनिया की मुहब्बत अल्लाह तआला के जिक्र से निकलती है। इसलिये कहा गया है कि खूब जिक्र करो, वरना आजकल सारे दिल दुनिया की मुहब्बत में चूर हैं और इसकी वजह से परेशान हैं। चाहे बूढ़ा हो, चाहे जवान हो, यहां तक कि दीनदार छात्र जो फ़ारिग़ होते हैं और दीन का काम करना चाहते हैं उनके मां-बाप दिखते हैं दीनदार, लेकिन उनके पीछे पड़े रहते हैं कि तुम हमको कमा कर दो। कितने बेचारे अक्सर शिकायत करते हैं कि हम क्या करें मां-बाप परेशान किये हुए हैं कि ज्यादा पैसा कमाकर लाओ हम नहीं जानते कि कहां से लाओ, हमको पैसा चाहिये और इसीलिये कितने लोग पढ़ते ही नहीं। जो लोग जाहिल हैं या मामूली किसान हैं वो तो बेचारे किसी काम के नहीं, न रोटी मिलती है न दीन मिलता है, भैंस चराने में लगा दिया, किसी मामूली काम पर बैठा दिया, 15 रुपये दिन भर में लाकर देता है बस इसी में खुश हैं। जब दुनिया की मुहब्बत दिल व दिमाग़ पर छा जाती है तो फिर बड़े हों या छोटे मामला ये होता है कि रुपया पैसा ही सबकुछ बन जाता है।

दीन के एक बड़े आलिम ने एक बार कहा कि हम गोमती के पुल पर खड़े होते थे, हमारे एक बुजुर्ग आये, उन्होंने कहा कि देखो ये आदमी जा रहा है ये किस चीज़ से जा रहा है? साइकिल से, ये कौन है? आदमी है, दूसरा मोटर साइकिल से गुजरा तो वो कहते रहे कि नहीं, ये वो रुपया जा रहा है, ये पांच रुपया जा रहा है, ये दस रुपया जा रहा है, कई पांच में खुश हैं, कुछ दस में खुश हैं, कुछ दस हजार में खुश हैं, उन्हे दस लाख चाहिये लेकिन फ़िक्र एक ही है चाहे बड़े से बड़ा सेठ हो या निम्न वर्ग का बीड़ी पीने वाला आदमी हो, सबका दिल व दिमाग़ बस ढब्बा हुआ है पैसे में। इसीलिये आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि दीन में अपने से ऊपर वाले को देखो और दुनिया में अपने से नीचे वाले को देखो। अगर दुनिया के बारे में अपने से ऊपर वाले को देखोगे तो अल्लाह तआला की नेमत की नाकदरी करोगे। लेकिन अब तो अक्सर मामला उल्टा है। दीन में तो नीचे वाले को देखते हैं, अरे वो भी तो नमाज़ नहीं पढ़ते, वो भी तो तरावीह नहीं पढ़ते, अरे वो नहीं पढ़ते तो तुम पढ़ो,

इसमें अपने से नीचे वाले को देखेंगे। और दुनिया के मामले में ऊपर वाले को देखेंगे कि फ़लां मोटर साइकिल से चल रहा है, उसका घर बन गया है और आप अभी तक कोठरी में रह रहे हैं। इसका नतीजा ये होता है कि खुद भी परेशान और दूसरे भी परेशान। इस तरह हर समय परेशान रहेगा और न जाने किन किन बीमारियों में पड़ा रहेगा।

इसलिये अच्छों के साथ में जब आदमी रहता है तो उसका दिल अच्छा हो जाता है। दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है और अल्लाह वाला वही है जिस के दिल में दुनिया की मुहब्बत न हो। ये अल्लाह वालों की निशानी है। झूठ न बोलता हो, नमाज़ों की पाबन्दी करता हो, ये मोटी मोटी पहचान हैं इसलिये पहचानना आसान है। सबसे पहले देख लें कि झूठ तो नहीं बोलता, नमाज़ की पाबन्दी करता है, और तीसरी चीज़ अपनी इच्छा के चक्कर में तो नहीं पड़ता है। खाना, कपड़ा, पैसा बस इसकी चिन्ता या प्रसिद्धि की। अल्लाह के जो नेक बन्दे होते हैं उनको पैसे की परवाह नहीं होती है, सोने का ढेला और मिट्टी का ढेर दोनों बराबर हो जाते हैं। पैसा उनके पास आता है लेकिन सब बांट देते हैं। न शोहरत के लिये भागते हैं न प्रसिद्ध होने का उपाय खोजते हैं। बस अल्लाह के नेक बन्दों के साथ की चिन्ता कररी चाहिये।

इसी संगत की बरकतों के लिये हमारी पूरी व्यवस्था सामूहिकता के साथ जोड़ दी गयी है। क्योंकि सामूहिकता में हर व्यक्ति को दूसरे से लाभ पहुंचता है। इस सामूहिकता की एक अच्छी शक्ति नमाज़ जमात के साथ है। सब नमाज़ पढ़ने वाले हैं। सब माशाअल्लाह अल्लाह वाले हैं। इसका फ़ाएदा एक दूसरे को पहुंचता है। नमाज़ सब साथ में पढ़ते हैं इसमें संगत का लाभ होता है। और इसी तरह जब हज करते हैं तो एक साथ रहने का फ़ाएदा होता है। इसीलिये हमारी हर चीज़ सामूहिकता के साथ रखी गयी है। रोज़ा एक साथ रखना है, नमाज़ एक साथ पढ़नी है, हज एक साथ करना है इसी तरह एक साथ रहने का हुक्म है। अच्छे लोगों के साथ हम मिलेंगे जुलेंगे तो हमारे अन्दर भी अच्छाई पैदा होगी। अल्लाह तआला हम सबको सही संगत अता फ़रमाये।

શ્રીરત-એ-ગંબરી કે આઇને મેં

હન્મારી તાર્ખીર

| મૌલાના જાફર હસની નદવી

રબીઉલ અબ્દલ કે મુબારક મૌકે પર ઈદ મિલાદુન્નબી કી મહાફિલોં સજતી હું | ખુત્બાં ઔર બયાનોં કી પુરજોશ વ વલવલા અન્ગેજ તકરીરે હોતી હું | નાતિયા મુશાયરોં કા એહતિમામ હોતા હૈ | ઔર પૂરી રાત યે સિલસિલા જારી રહ કર સુબહ કી અજાન કો ખત્મ હોતા હૈ | લેકિન પૂરી રાત જાગકર જબ લોગ અપને ઘરોં કો લૌટતે હું તો વો યે નહીં બતા સકતે કી હુજૂર પાક મુહમ્મદ (સ૦૩૦) કી ઘરેલૂ જિન્દગી ઔર સમાજી જીવન કૈસા થા | વો મેરાજ કા વાક્યા બયાન કર સકતે હું, ઓહદ કે યુદ્ધ કી તફસીલ આપકે સામને રખ સકતે હું, આપ (સ૦૩૦) કે ચમત્કારોં પર પ્રકાશ ડાલ સકતે હું, ગાર-એ-હિસા મેં આપ (સ૦૩૦) કી ઇબાદત કા મન્જર ખીંચ સકતે હું, મક્કે સે મદીને હિઝરત કી કહાની બયાન કર સકતે હું, મદીને મેં હોને વાલે આપ (સ૦૩૦) કે ઇસ્તિકબાલ કા નક્શા ખીંચ સકતે હું, આપ (સ૦૩૦) કી ઊંઠની “કૃસ્વા” કે હજરત અબૂ અય્યબ અન્સારી કે દરવાજે પર ઠહરને કા મન્જર બયાન કર સકતે હું, લેકિન આપ (સ૦૩૦) કે ઘરેલૂ ઔર સામાજિક જીવન કે બારે મેં વો બિલ્કુલ અજ્ઞાન ઔર ખામોશ નજર આતે હું | હાલાંકિ સીરત પાક કા વો પહુલું જો સામાજિક જીવન સે સંબંધ રખતા હૈ, મનવ કે જીવન મેં બડા મહત્વપૂર્ણ હૈ | ઇબાદત કે મામલે મેં સીરત હમારા યકીનન પૂરા માર્ગદર્શન કરતી હૈ બલિક ઇબાદત કો સ્વીકાર યોય બનાને મેં સીરત બુનિયાદી કિરદાર અદા કરતી હૈ | અગાર ઇબાદત મેં સુન્તતોં કા ધ્યાન ન રહ્યા જાએ ઔર આપ (સ૦૩૦) કે બતાએ હુએ તરીકે કે અનુસાર ઇસ ઇબાદત કો અન્જામ ન દિયા જાએ તો વો ઇબાદત બેરૂહ ઔર બેજાન હૈ ઔર ઉસ ઇબાદત કે વો પ્રભાવ નહીં પડ્ય સકતે જિસકા વાદા અલ્લાહ તાલા ને ફરમાયા હૈ |

લેકિન ક્યા આહુજૂર (સ૦૩૦) ને સારા સમય મર્સિજદ મેં ગુજારા?ક્યા આપ (સ૦૩૦) ઉન આવશ્યકતાઓં સે અલગ થે જો ઇન્સાની જિન્દગી મેં પેશ આતી હું?ક્યા આપ (સ૦૩૦) ને અપની જિન્દગી કા અધિકતર સમય રેગિસ્ટાનોં ઔર ગુફાઓં મેં ગુજારા જહાં ઇન્સાનો સે વાસ્તવ કમ પડતા હૈ?અગાર ઐસા હોતા તો ઇસ આયત (અનુવાદ: બેશક રસૂલુલ્લાહ (સ૦૩૦) કી જિન્દગી મેં તુમ્હારે લિયે બેહતરીન નમૂના હૈ) કા કોઈ અર્થ નહીં રહ જાતા | યકીનન આપ (સ૦૩૦) કી જિન્દગી મેં વો સમી મસલે પેશ આયે જો કિસી ભી ઇન્સાન કો ઉપ્ર કે કિસી ભી પડ્યાવ મેં પેશ આ

સકતે હું | આપ (સ૦૩૦) કા બચપન ભી ગુજરા, જવાની ભી ગુજરી, ઔર જવાની કે બાદ કી ઉપ્ર ભી ગુજરી, બચપન કી ખ્યાહિશેં, જવાની કી આવશ્યકતાએ, ઔર જવાની કે બાદ કે મસલે ભી આપ કો પેશ આયે, રહન-સહન, જિન્દગી ગુજારને કા તરીકા, ઔર લેન-દેન કે સિલસિલે મેં ભી આપ (સ૦૩૦) ને ઉમ્મત કે સામને એક નમૂના પેશ કરકે દિખા દિયા | હમે ઇન નમૂનોં કો ભી સામને લાને કી આવશ્યકતા હૈ |

હમ વજુ મેં ખ્યાલ કરતે હું સુન્તતોં કા, નહાને મેં એહતિમામ કરતે હું સુન્તત કે તરીકે કો અપનાને કા, પાની પીતે હું તો કોશિશ કરતે હું કી બૈઠ કર પિયે, ઔર તીન સાંસો મેં પિયે, ખાને મેં દાયાં હાથ ઇસ્તેમાલ કરતે હું, પ્લેટ સાફ કરતે હું, ઉંગલિયા ચાટતે હું, ખાને કે બાદ કી દુઆં પડતે હું, ક્યોંકિ હમારે પ્યારે નબી મુહમ્મદ (સ૦૩૦) ને હમે યે સબ બતાયા બલ્ક કરકે દિખાયા, લેકિન ક્યા હુજૂર પાક (સ૦૩૦) ને કેવેલ ઇન્હી ચીજોં મેં હમારા માર્ગદર્શન કિયા જો હમારે વ્યવિતગત જીવન સે સંબંધ રખતી હૈ?ઔર ક્યા આપ (સ૦૩૦) ને કેવેલ ઇન્હી ચીજોં કે સિલસિલે મેં હમે હિદાયતો દી જિનકો ઇબાદત કહા જાતા હૈ?

ક્યા આપ (સ૦૩૦) ને ઘર મેં રહને કા તરીકા નહીં બતાયા?ક્યા આપ (સ૦૩૦) ને સઢક પર ચલને કા તરીકા નહીં બતાયા?ક્યા રાસ્તે પર ખડે રહને વાલોં પર આપ ને કુછ જિમ્મેદારિયાં નહીં ડાલી?ક્યા પડોસિયોં કે સાથ અચ્છે બર્તાવ કી શિક્ષા આપ (સ૦૩૦) ને નહીં દી?ક્યા રાસ્તે સે તકલીફ દેને વાલી ચીજોં કો હટાને કો સદકા કરાર નહીં દિયા?ક્યા બીમાર કો દેખને કે સિલસિલે મેં આપ (સ૦૩૦) કી જબાન ખામોશ હૈ?ક્યા મુસલમાન ભાઈ સે મુસ્કરા કર મિલના સવાબ કા જરિયા નહીં હૈ? ક્યા નર્મ દિલી નર્મ મિજાજી, તવાજો ઔર ઇન્કસારી નબી (સ૦૩૦) કી વિશેષતા મેં સે નહીં હૈ?

માં-બાપ કે સાથ અચ્છે બર્તાવ કી તાકીદ કિસને ફરમાયી?બીવી કે અધિકાર અદા કરને પર જોર કિસને દિયા?યતીમોં, ગૃહીબોં ઔર બેવાઓં કે પોષણ પર બશારત કિસને દી?ઈમાનદાર વ્યાપારી કે લિયે હર્ષ કી ગર્મી મેં અર્શ કે સાયે કા વાદ કિસને કિયા?ગીબત, ચુગલી, ઇલ્જામ લગાના ઔર ઐબ નિકાલને કો બદતરીન ગુનાહ કિસને કરાર દિયા?ઝૂઠ, ખ્યાનત ઔર વાદા ખિલાફી કો નિફાક કી અલામતો મેં

किसने शामिल किया?

आप (स0अ0) की जिन्दगी में खुशी के लम्हे भी आये, और गृह व मलाल के भी, आप (स0अ0) ने अपनी चहती बेटियों को दुल्हन बनाकर रुखसत भी किया और अपने लख्ता—ए—जिगर हज़रत इब्राहीम को अपने हाथों कब्र में उतारा भी, आप (स0अ0) ने जंग के मैदान में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते हुए भी देखा और पीछे हटते हुए भी, सुलह के वाक्यात भी आप (स0अ0) की जिन्दगी में पेश आये और जंग के भी। आप (स0अ0) ने जान छिड़कने वाले सहाबा किराम रजि0 की मुहब्बत भी देखी और खून के प्यासे दुश्मनों की दुश्मनी भी। आप (स0अ0) ने माफ़ करके भी दिखाया और ताकीद करके भी, आप (स0अ0) ने छोड़ा भी और क़दम भी उठाए, आप (स0अ0) का वास्ता कैदियों से भी पड़ा और गुलामों से भी, अमीरों से भी और सरदारों से भी, आप (स0अ0) ने खुद भूके रहकर दूसरों को खिलाने का सबक़ दिया, अपनों को वंचित करके ग़ेरों को नवाज़ने का नमूना पेश किया, पसीना सूखने से पहले मज़दूरों को उनकी मज़दूरी की शिक्षा दी, औरतों के साथ नर्म बरतने का हुक्म दिया। अमीर की पैरवी को आवश्यक घोषित कर दिया।

आप (स0अ0) की मजलिस के बारे में आता है कि वो इल्म व हया की मजलिस होती थी, न उसमें किसी पर इल्ज़ाम लगता था, न किसी का राज़ खुलता था, न किसी के ऐब की चर्चा होती थी, न किसी को रुसवाई का कोई मौका मिलता था, इसमें सब्र की ताकीद होती थी, अमानत व दयानत दारी का सबक़ होता था, ज्ञान व हिक्मत की बातें होतीं थीं, इसमें हर बड़ा सम्मानीय होता था और हर छोटे को प्रेम किया जाता था।

जरा आप (स0अ0) के घर पर नज़र डालिये, केवल एक कमरा है और वो भी इतना तंग कि आप (स0अ0) नमाज़ पढ़ते हैं तो हज़रत आयशा सिद्दीका रजि0 अपने पांव नहीं फैला सकती थीं, इसीलिये रिवायत में आता है कि जब तक आप (स0अ0) क्याम में या रुकु में होते तो हज़रत आयशा सिद्दीका रजि0 अपने पांव फैलाये रहतीं और जब आप (स0अ0) सजदे में जाते तो हज़रत आयशा सिद्दीका रजि0 अपने पांव समेट लेतीं, तब आप (स0अ0) सजदा फ़रमाते, इतना तंग मकान और इतनी तंग आरामगाह थी आप (स0अ0) की। इस मकान के फर्नीचर को तो देखिये, केवल दो चीजें थीं। एक तख्त और केवल एक कुर्सी थी। जिसके चारपाये थे और वो लोहे के थे बाकी उसमें लकड़ी लगी हुई थी। इन दो चीजों के इलावा कोई चीज़ आप (स0अ0) के घर में बतौर फर्नीचर नहीं थी।

दरवाज़े पर पर्दा अवश्य था। लेकिन वो बहुत मामूली, ऐश के लिये नहीं, सजावट के लिये नहीं, मकान की जीनत बढ़ाने के लिये नहीं, बल्कि केवल इसलिये कि अचानक दरवाज़ा खुलने पर बेपर्दगी न हो और अगर दरवाज़े पर कोई

खड़ा हो जाए तो सामना न हो।

घर में आप (स0अ0) का वक्त कैसे गुज़रता था? वो भी हज़रत आयशा सिद्दीका रजि0 की ज़बानी सुनिये, फ़रमाती हैं: आप (स0अ0) सख्त मिजाज शौहरों की तरह नहीं थे, अपने कपड़े खुद सी लेते, खुद ही चप्पल टांक लेते, खुद बकरी का दूध दू लिया करते थे, और घर में आप (स0अ0) इसी तरह काम काज करते थे, जिस तरह दूसरे सारे मर्द अपने घरों में काम करते हैं। आप (स0अ0) फ़रमाया करते थे: तुमसे सबसे बेहतर वो है जो अपने घरवालों के लिये सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घर वालों के लिये तुम सबसे बेहतर हूँ।

मदीना मुनव्वरा में आप (स0अ0) की मौजूदगी में एक सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ शादी करते हैं, न निकाह आपसे पढ़वाते हैं और न निकाह की आपको सूचना देते हैं, लेकिन आप (स0अ0) ने न बुरा माना और न अप्रसन्नता प्रकट की बल्कि वलीमे की ताकीद करके इस्लाम में वलीमे की तरफ़ केवल इशारा किया, लेकिन इसके बाद भी ये नहीं कहा कि अब्दुर्रहमान! निकाह में तो तुम भूल गये, वलीमे में न भूल जाना।

बच्चों के साथ आपका रवैया इतना मुहब्बत भरा होता था कि बच्चे आपसे बहुत घुल—मिल जाते थे। बच्चों से आप (स0अ0) बहुत प्यार करते थे, खुद ही उनको सलाम करते, उनके सरों पर हाथ फेरते, उनके बीच कभी—कभी मुकाबला करा देते, जब आप (स0अ0) सफ़र से वापस आते तो घर के बच्चे आप (स0अ0) का स्वागत करने दौड़ते, आप (स0अ0) किसी को प्यार करते, किसी को अपनी सवारी पर पीछे बिठा लेते, किसी को हाथों पर उठा लेते और गोद में ले लिया करते।

गरीबों, कमज़ोरों, मरीज़ों से मिलने खुद जाते और उनके गृह को दूर करने का उपाय करते, उनकी परेशानियों और तकलीफ़ों पर सवाब की उम्मीद दिलाकर उनके एहसास को बदलने की कोशिश करते।

आप (स0अ0) ने उस वलीमे को सबसे बुरा वलीमा घोषित कर दिया है जिस वलीमे में अमीरों को तो दावत दी जाए और गरीबों को, मिस्कीनों को नज़रअन्दाज कर दिया जाए, आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि मैं मिस्कीनों से मुहब्बत करता हूँ।

आप (स0अ0) ने दो गरीब बच्चियों का पोषण करने वालों को ये बशारत दी कि वो और मैं इतने करीब होंगे जितनी मेरी ये दो उंगलियां और फिर आप (स0अ0) ने अपनी दोनों उंगलियों को मिलाकर दिखाया।

अब आइये एक नज़र डालते हैं कि नबी आखिरुज्ज़मा मुहम्मद (स0अ0) की आखिरी हिदायत बल्कि आप (स0अ0) की वसीयत पर। ज़रा दिल पर हाथ रखकर सोचिये, किसकी वसीयत है? किसको की जा रही है? किस अवसर पर की जा रही है? एक बाप वसीयत करता है तो औलाद के लिये इससे अधिक आर की बात और कोई समझी नहीं जाती कि औलाद ने अपने

बाप की वसीयत पर अमल नहीं किया, और अगर वसीयत करने वाली ज़ात नबी (स०अ०) की ज़ात हो। जिसके लिये मुहब्बत व एहतराम और इताअत व फरमाबरदारी की ज़रा सी कमी ईमान वाले को ईमान के दायरे से बाहर कर देने के लिये पर्याप्त है। खुद आप ही का इरशाद है कि तुम्हे से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसको उसके मां-बाप और खुद उसकी जान से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊं।

आखिरी हज के मौके पर देखिये आप (स०अ०) ने क्या फरमाया:

अरबी को अजमी और अजमी को अरबी पर कोई श्रेष्ठता नहीं, तुम सब आदम की औलाद हो, और आदम मिट्टी से बने थे।

जाहिलियत के सभी खून यानि खून के बदले छोड़ दिये गये हैं और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का खुद रबिया बिन हारिस के बेटे का खून माफ़ करता हूँ। जाहिलियत के सभी ब्याज भी समाप्त कर दिये गये और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ब्याज अब्बास बिन अब्दुल मुतलिब का ब्याज माफ़ करता हूँ। बेशक तुम्हारा खून, और तुम्हारा माल और तुम्हारी इज्जत इसी तरह हराम (एहतराम वाला) हैं जिस तरह ये दिन, ये महीना और ये शहर हराम है।

औरतों के मामले में खुदा से डरो, क्योंकि वो तुम्हारे अधीन हैं। वो अपने मामले में अधिकार नहीं रखती। इसलिये उनका तुम पर हक़ है। उन्हे खाने, कपड़े का हक़ पूरी तरह हासिल है। तुमने उन्हे खुदा की अमानत के तौर पर अपने अधीन रखा है। मैं तुम्हे एक चीज़ छोड़कर जा रहा हूँ और तुम इसको मज़बूती से पकड़े रहना, अगर तुमने ऐसा किया तो तुम गुमराह न होगे, वो चीज़ क्या है? अल्लाह की किताब। मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे की गरदन मारने लगो। तुम्हे खुदा के सामने हाजिर होना पड़ेगा, और वो तुमसे तुम्हारे आमाल के बारे में पूछेगा। अगर कोई हब्शी कान कटा गुलाम भी तुम्हारा सरदार हो और वो तुमको खुदा की किताब के अनुसार ले चले तो उसकी इताअत व फरमाबरदारी करना। रस्मोरिवाज के बन्धन में जकड़े, जात व बिरादरी के वर्गों में बंटे, बदले की आग में सुलगते, नफरत की आँधियों में हिचकोले खाते, ज़रा ज़रा सी बात पर दूसरी की टोपियां गिराते और पगड़ियां उछालते और सूद के हराम होने का विरोध करते, आज के इस समाज में सीरत पाक के इन नमूनों को भी सामने लाने की आवश्यकता है। और जब तक ज़िन्दगी के हर मैदान में सीरत पाक के नमूनों को नहीं अपनाया जाएगा, उस समय तक दीन पूरा हमारी ज़िन्दगियों में नहीं आ पायेगा। यही (दाखिल हो जाओ ईमान में पूरे पूरे) (तुमको हुजूर पाक की तरफ़ से जो कुछ भी हुक्म मिले उसको पूरा करो, और जिस काम से आप मना फरमायें उससे दूर रहो) का संदेश है।

शेष : बबी झ०अ० छी आमद, ख़माबा.....

और यकायक काया पलट गयी, कायनात की हर चीज़ बदल गयी, लोग इस्लाम के दायरे में दाखिल होने लगे, सारी दुनिया में आपसी मुहब्बत और सहयोग का वातावरण स्थापित हो गया। भाईचारे की रुह इन्सानी समाज में पैवस्त हो गयी। हर एक ने मिल कर अल्लाह की रस्सी थाम ली। और इन्तिहाई सुकून व इत्मिनान अमन व सलामती, इज्जत व सम्मान हिदायत व इबादत, मुहब्बत, महानता कि साथ ज़िन्दगी गुज़ारी और जब भी शैतान ने उनकी मज़बूत कड़ी बिखेरने, उनकी ताक़त को तोड़ने और उनकी एकता को ख़त्म करने की नापाक कोशिश की उन्होंने इस फरमान इलाही से सबक़ हासिल किया:

﴿وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفْرُقُوا﴾

(अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो और टुकड़ियों में न बटो) और पहली फुरसत में इसको अपनी ज़िन्दगी में अमली तौर पर लागू कर लिया।

पुराने ज़माने में जाहिलियत का ख़ात्मा नबी करीम स०अ० ने अपनी दावत व पैगाम के ज़रिये से फरमाया, जो वो खुदा की ओर से लेकर आये थे। और सारी दुनिया के सामने पेश किया था। तो हम कैसे उम्मीद करते हैं कि मौजूदा जाहिलियत का ख़ात्मा आप स०अ० की दावत व तब्लीग के बगैर पूरा होगा। और हम कैसे सोच लेते हैं कि सभ्यता व कारोबार व आर्थिक उन्नति के फ़ार्मूलों और धर्मनिरपेक्ष शास्त्रों और भौतिकवादी दृष्टिकौशल से वो मिट जाएगी। और कैसे आरजू की जा सकती है कि वो फ़रेब से भरे हुए सियासी तरीकों और संयुक्त रा द्रू की अमन की कान्फ्रेंसों और श्रेष्ठ स्तर पर हाने वाले सेमिनारों और बड़े-बड़े कैम्पों के अन्दर अमन व मुआहिदों के ज़रिये बदल जाएगी।

हरगिज़ नहीं वो केवल खुदा की हिदायत व मार्गदर्शन जो हुजूर स०अ० से हासिल हुआ और इस्लामी दावत जो नबी करीम स०अ० ने पेश की जिसका पूरी दुनिया के सामने खुलकर ऐलान किया केवल इसी के द्वारा उसकी समाप्ती संभव है।

﴿إِنَّهَا تَذَكَّرَةٌ مِّنْ شَاءَ ذَكَرٌ﴾

(अनुवाद: ख़बरदार अस्ल में वो एक बड़ी नसीहत है अतः जो चाहे दिमाग़ में बिठा ले)

ਬਿਕੁਰਖਾ ਉਤਸਾਹਿਸਾਗ ਆਂਖੁਤਸਾਕੋਲੋਂਕਾ

ਬਿਲਾਲ ਅਬਦੁਲ ਹਹਿ ਹਸਨੀ ਨਦਵੀ

ਹਜ਼ਾਰੋਂ ਸਾਲ ਪਹਲੇ ਕੀ ਬਾਤ ਹੈ ਕਿਸੀ ਗਾਂਵ ਮੈਂ ਏਕ ਕਿਸਾਨ ਰਹਤਾ ਥਾ। ਵੋ ਬੜਾ ਖੁਦਾਪਰਸਤ ਔਰ ਨੇਕ ਇੱਨਸਾਨ ਥਾ। ਅਲਲਾਹ ਤਾਲਾ ਨੇ ਉਸਕੀ ਖੇਤੀ ਬਾਡੀ ਮੈਂ ਬਡੀ ਬਰਕਤ ਰਖੀ ਥੀ। ਪੈਦਾਵਾਰ ਕਾ ਬੜਾ ਹਿੱਸਾ ਵੋ ਗੁਰੀਬਾਂ ਔਰ ਜ਼ਰੂਰਤਮਨਦਾਂ ਕੋ ਦੇ ਦੇਤਾ ਥਾ। ਕਟਾਈ ਕੇ ਸਮਧ ਮੋਹਤਾਜ਼ਾਂ ਕਾ ਬੜਾ ਮਜਮਾ ਉਸਕੇ ਖੇਤੋਂ ਕੇ ਪਾਸ ਜਮਾ ਹੋ ਜਾਤਾ, ਵੋ ਸਬਕੋ ਖੁਸ਼ੀ—ਖੁਸ਼ੀ ਕੁਛ ਨ ਕੁਛ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਤਾ। ਕਿਸੀ ਕੋ ਖਾਲੀ ਹਾਥ ਵਾਪਸ ਨ ਕਰਤਾ। ਜ਼ਮਾਨਾ ਐਸੇ ਹੀ ਗੁਜਰਤਾ ਰਹਾ। ਅਲਲਾਹ ਤਾਲਾ ਨੇ ਉਸਕੀ ਕੰਝ ਬੇਟੇ ਦਿਧੇ ਜੋ ਉਸਕਾ ਹਾਥ ਬਟਾਤੇ, ਹੱਸੀ ਖੁਸ਼ੀ ਜਿਨ੍ਦਗੀ ਗੁਜਰ ਰਹੀ ਥੀ। ਕਿਸਾਨ ਅਥ ਬੂਢਾ ਹੋ ਗਿਆ ਥਾ ਔਰ ਉਸਕੇ ਜਵਾਨ ਬੇਟੇ ਸਾਬ ਕਾਮ ਕਾਜ ਕਰਤੇ। ਉਨਕੋ ਬਾਪ ਕਾ ਇਤਨੀ ਅਧਿਕ ਮਾਤਰਾ ਮੈਂ ਦਾਨ ਕਰਨਾ ਜ਼ਿਆਦਾ ਪਸਨਦ ਨ ਥਾ। ਲੇਕਿਨ ਸਾਬ ਬਾਪ ਕੀ ਬਾਤ ਮਾਨਨੀ ਥੀ ਔਰ ਉਸਕੀ ਖਾਹਿਸ਼ ਕੇ ਏਹਤਰਾਮ ਮੈਂ ਉਸਕੇ ਖਿਲਾਫ ਕੁਛ ਨ ਕਰਤੇ। ਏਕ ਦਿਨ ਵੋ ਅਲਲਾਹ ਕਾ ਨੇਕ ਬੰਦਾ ਚਲ ਬਸਾ, ਬੇਟਾਂ ਕੋ ਬਾਪ ਸੇ ਮੁਹਿਬਤ ਥੀ, ਅੱਖੋਂ ਤਕ ਵੋ ਸਦਮੇ ਸੇ ਨਿਢਾਲ ਰਹੇ, ਫਿਰ ਧੀਰੇ—ਧੀਰੇ ਜਿਨ੍ਦਗੀ ਉਸੀ ਰਫ਼ਤਾਰ ਸੇ ਚਲਨੇ ਲਗੀ।

ਪੈਦਾਵਾਰ ਇਸ ਬਾਰ ਭੀ ਬਹੁਤ ਅਚਲੀ ਹੁਈ ਥੀ। ਬੇਟਾਂ ਕੇ ਦਿਲ ਮੈਂ ਬਾਰ ਬਾਰ ਖਾਲ ਆਤਾ ਥਾ ਕਿ ਮੇਹਨਤ ਸਾਬ ਹਮਕੋ ਕਰਨੀ ਪਢ੍ਹਤੀ ਹੈ, ਦੂਸਰਾਂ ਕਾ ਇਸਮੈਂ ਕਿਆ ਹਕ ਬਣਤਾ ਹੈ। ਅਥ ਬਾਪ ਕਾ ਭੀ ਇਨਿਤਿਕਾਲ ਹੋ ਚੁਕਾ ਥਾ ਇਸਲਿਧੇ ਉਨ੍ਹਾਂਨੇ ਆਪਸ ਮੈਂ ਮਾਖਿਵਾ ਕਿਧਾ ਕਿ ਜੋ ਭੀ ਪੈਦਾਵਾਰ ਹੋ ਹਮ ਲੋਗਾਂ ਕੋ ਮਿਲ ਜਾਏ ਔਰ ਦੂਸਰਾਂ ਕੋ ਉਸਾਂ ਕੁਛ ਨ ਦੇਨਾ ਪਢੇ। ਮੰਝਲੇ ਭਾਈ ਨੇ ਕੁਛ ਏਤਰਾਜ ਭੀ ਕਿਧਾ ਕਿ ਬਾਪ ਕੇ ਤਰੀਕੇ ਸੇ ਹਟਨਾ ਮੁਨਾਸਿਬ ਨਹੀਂ, ਲੇਕਿਨ ਸਾਬ ਕੀ ਰਾਧ ਏਕ ਥੀ, ਮਜਬੂਰੀ ਮੈਂ ਉਸਕੋ ਭੀ ਦੇਨਾ ਪੜਾ, ਬਾਤ ਯੇ ਹੁਈ ਕਿ ਐਸੇ ਵਕਤ ਕਟਾਈ ਕੀ ਜਾਏ ਕਿ ਕਿਸੀ ਕੋ ਪਤਾ ਹੀ ਨ ਚਲੇ ਔਰ ਫਿਰ ਭੀ ਅਗਰ ਕੋਈ ਆਨੇ ਲਗੇ ਤੋ ਉਸਕੋ ਰੋਕ ਦਿਧਾ ਜਾਏ ਔਰ ਇਸ ਬਾਰ ਸਾਰਾ ਗੁਲਲਾ ਘਰ ਮੈਂ ਲਾਯਾ ਜਾਏ। ਅਥ ਹਮ ਲੋਗਾਂ ਕੀ ਸੰਖਾ ਭੀ ਬਢ ਰਹੀ ਹੈ ਔਰ ਆਵਸ਼ਕਤਾ ਭੀ ਅਧਿਕ ਹੈ।

ਏਕ ਦਿਨ ਸੁਫ਼ਰ ਸੁਫ਼ਰ ਸਾਬ ਕੇ ਸਾਬ ਚੁਪਕੇ ਸੇ ਨਿਕਲੇ ਤਾਕਿ ਕਿਸੀ ਕੋ ਖੁਬਾਰ ਨ ਹੋ ਕਿ ਵੋ ਪੂਰਾ ਗੁਲਲਾ ਕਾਟ ਕਰ ਅਪਨੇ

ਘਰ ਲੇ ਆਏ। ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਸਾਬ ਖੇਤ ਪਰ ਪਹੁੰਚੇ ਤੋ ਵਹਾਂ ਦੁਨਿਆ ਹੀ ਦੂਸਰੀ ਥੀ, ਖੇਤ ਸਾਬਕੇ ਸਾਬ ਤਹਸ ਨਹਸ ਹੋ ਚੁਕੇ ਥੇ, ਸਾਬ ਕੇ ਚੇਹਰੇ ਫੀਕੇ ਪੜ ਗਿਆ। ਏਕ ਬੌਲਾ ਹਮ ਗੁਲਤ ਜਗਹ ਤੋ ਨਹੀਂ ਆ ਗਿਆ.... ਸਾਬ ਕਹਨੇ ਲਗੇ ਕਿ ਨਹੀਂ, ਯੇ ਹਮਾਰੀ ਬਦਕਿਸਮੀ ਹੈ ਕਿ ਸਾਬ ਤਬਾਹ ਹੋ ਗਿਆ, ਮੰਝਲਾ ਭਾਈ ਬੌਲਾ ਕਿ ਹਮ ਨੇ ਕਹਾ ਨਹੀਂ ਥਾ ਕਿ ਅਭਾ ਕੇ ਤਰੀਕੇ ਕੋ ਮਤ ਛੋਡੋ, ਗੁਰੀਬਾਂ ਕਾ ਹਕ ਨਿਕਾਲਤੇ ਰਹੋ, ਅਥ ਯਹੀ ਸੂਰਤ ਹੈ ਕਿ ਅਪਨੇ ਕਿਧੇ ਪਰ ਤੌਬਾ ਕਰੋ, ਅਲਲਾਹ ਕੀ ਤਾਰੀਫ ਬਿਧਾਨ ਕਰੋ, ਤਾਕਿ ਅਲਲਾਹ ਫਿਰ ਵਹੀ ਬਰਕਤ ਲੈਂਦਾ ਦੇ ਜੋ ਉਸਨੇ ਅਭਾ ਜੀ ਕੇ ਕਾਸ ਮੈਂ ਰਖੀ ਥੀ।

ਕੁਰਾਨ ਮਜੀਦ ਮੈਂ ਯੇ ਵਾਕਿਆ ਬਿਧਾਨ ਕਿਧਾ ਗਿਆ ਹੈ ਜਿਸਮੈਂ ਦੁਨਿਆ ਕੀ ਹਕੀਕਤ ਬਿਧਾਨ ਕੀ ਗਿਆ ਹੈ। ਆਦਮੀ ਦੁਨਿਆ ਕੀ ਲਾਲਚ ਮੈਂ ਆਖਿਰਤ ਤੋ ਗੁਵਾਤਾ ਹੀ ਹੈ ਕਿਉਂ ਬਾਰ ਉਸਕੋ ਦੁਨਿਆ ਭੀ ਗੁਵਾਨੀ ਪਢ੍ਹਤੀ ਹੈ ਔਰ ਉਸਕੋ ਭਾਰੀ ਨੁਕਸਾਨ ਉਠਾਨਾ ਪਢ੍ਹਤਾ ਹੈ।

ਇਸ ਵਾਕਿਆ ਸੇ ਜੋ ਦੂਸਰੀ ਚੀਜ਼ ਸਾਮਨੇ ਆਤੀ ਹੈ ਵੋ ਸਦਕੇ ਕੀ ਅਹਮਿਤ ਹੈ। ਏਕ ਏਕ ਦਾਨੇ ਕਾ ਅਲਲਾਹ ਤਾਲਾ ਸੌਗੁਨਾ ਬਡਾਕਰ ਬਲਿਕ ਉਸਾਂ ਭੀ ਜ਼ਿਆਦਾ ਸਵਾਬ ਦੇਤਾ ਹੈ। ਔਰ ਇਸ ਦੁਨਿਆ ਮੈਂ ਭੀ ਸਦਕੇ ਆਫਿਤ ਔਰ ਹਿਫ਼ਾਜ਼ਤ ਕਾ ਜ਼ਰਿਏ ਬਣਨੇ ਹੈਂ। ਹਦੀਸ ਮੈਂ ਆਤਾ ਹੈ: (ਸਦਕੇ ਅਲਲਾਹ ਕੇ ਗੁਸ਼ੇ ਕੋ ਠੱਡਾ ਕਰ ਦੇਤਾ ਹੈ, ਕਿਤਨੀ ਬਲਾਂਏ ਕਿਤਨੀ ਬੀਮਾਰਿਆਂ ਔਰ ਕਿਤਨੇ ਹਾਦਸੇ ਸਦਕੇ ਔਰ ਖੈਰਾਤ ਸੇ ਟਲ ਜਾਤੇ ਹੈਂ)

ਕੁਰਾਨ ਕੇ ਯੇ ਵਾਕਿਆ ਕਿਸੇ ਕਿਹਾਨੀ ਕੇ ਤੌਰ ਪਰ ਪੇਸ਼ ਨਹੀਂ ਕਿਧੇ ਜਾਤੇ ਬਲਿਕ ਯੇ ਇਬਰਤ ਵ ਨਸੀਹਤ ਕੇ ਲਿਧੇ ਹੈਂ। ਕਾਮਯਾਬ ਹੈ ਵੋ ਸ਼ਾਬ ਜੋ ਇਨਸੇ ਸਾਬਕ ਲੇ ਔਰ ਇਨਕੀ ਰੋਸ਼ਨੀ ਮੈਂ ਅਪਨੇ ਅਸਤੁਲਨ ਕੋ ਦੂਰ ਕਰੋ।

ਅਲਲਾਹ ਤਾਲਾ ਫੁਰਮਾਤਾ ਹੈ:

وَقَدْ يَسِّرَنَا الْقُرْآنُ لِلَّذِي فَهَلْ مِنْ مُّدَكِّرٍ
(ਸੂਰਾ ਕਮਰ: ੧੭)

“ਔਰ ਹਮਨੇ ਕੁਰਾਨ ਕੋ ਸਮਝਾਨੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਆਸਾਨ ਕਰ ਦਿਧਾ ਹੈ, ਤੋ ਕੋਈ ਹੈ ਕਿ ਸੋਚੋ—ਸਮਝੋ !”



आपके दीनी स्वालात

और

उनके जवाबात

ब्याज की रकम को खर्च करना

प्रश्न: बैंक से मजबूरी में ब्याज लेना पड़ता है, इसे किन-किन लोगों को दिया जा सकता है, मैंने सुना है कि इसे मस्जिद में नहीं लगाया जा सकता लेकिन ग्रीबों को दे सकते हैं, लेकिन कुछ लोगों का कहना है कि जब वो अपने लिये हराम है तो दूसरों को हराम कैसे खिलाया जा सकता है? (काजी मुहम्मद ज़ैद, बेगूसराय, बिहार)

उत्तर: ब्याज लेना और देना दोनों इस्लामी शरीअत में मना है। मजबूरी में उलमा ने बैंक में पैसे रखने को जाएँ ज़रार दिया है, इसमें भी कोशिश ये होनी चाहिये कि बिना ब्याज के खाते (Current Account) में जमा करे, मजबूरी में ब्याजी खाते खुलवाये, फिर जब उस पर ब्याज की रकम मिले तो उसको उलमा ने बैंक में छोड़ देना नामुनासिब क़रार दिया है, इसलिये कि अनुभव ये है कि इस पैसे का प्रयोग ग़लत उद्देश्य में होगा। फिर निकालने के बाद इस माल की हैसियत “लुक्ता” जैसी हो गयी है। “लुक्ता” उस माल को कहते हैं कि कहीं पड़ा मिल जाए और उसके मालिक का पता न चल रहा हो, ऐसे माल के लिये हुक्म ये है कि पहले मालिक का पता लगाने की कोशिश की जाए, पर अगर पता न लगे तो उसकी तरफ से सदका कर दिया जाए। सूद के भी मालिक का पता नहीं होता न ही पता चल सकता है। लिहाज़ा “लुक्ता” पर क़्यास करके इसको भी बिना सवाब की नियत के ग्रीबों पर खर्च किया जाएगा, ग्रीब चूंकि इसके हक़दार हैं लिहाज़ा ये माल उनके लिये बिल्कुल हलाल व पाक है जैसे जकात मालदारों के लिये नाजायज़ है और ग्रीब मुसलमान के लिये हलाल व पाक है। यही मामला सूद का भी है। इस अन्तर के साथ कि ब्याज की रकम गैर मुस्लिम ग्रीबों को भी दी जा सकती है।

कई फुक्हा ने लिखा है कि “लुक्ता” को मुसलमानों के आम फ़ाएदे के कामों जैसे पुलों और रास्तों का निर्माण, नालियों की मरम्मत जैसे उद्देश्य में भी खर्च किया जा सकता है।

इसी तरह जिस बैंक से ब्याज मिला है उसी बैंक को अगर ब्याज देना पड़ जाए तो कई उलमा ने इसको भी जाएँ ज़रार दिया है ये मानों इस हराम माल को उसके मालिक तक

पहुंचाने की एक सूरत है।

इसी तरह बैंक अगर सरकारी हो तो उससे मिले हुए ब्याज से इनकम टैक्स (जिसके बदले में सरकार कोई चीज़ नहीं देती है) भी अदा किया जा सकता है और ये भी मालिक के पास माल पहुंचाने की सूरत है। लेकिन इनमें सबसे बेहतर शक्ल पहली है, बकिया के बारे में कई उलमा की राय नाजायज़ होने की है। वल्लाहुआलम

बिना कपड़ो के नहाना

प्रश्न: क्या हम बिना कपड़ो के नहा सकते हैं? (मुहम्मद अहसन अहमद, सऊदी अरब)

उत्तर: ऐसी जगह जहां किसी की नज़र न पड़े वहां बिना कपड़ों के नहाया जा सकता है, यद्यपि इसको नियम बना लेना बेहतर नहीं।

बालों का पर्दा

प्रश्न: इस्लाम में औरतों को बालों के लिये पर्दा क्यों आवश्यक है? इसकी क्या हिक्मत है? (अक्सा, रायबरेली)

उत्तर: जिस तरह औरतों के जिस्म के दूसरे हिस्से सतर में शामिल हैं, उसी तरह उनके बालों का भी पर्दा ज़रूरी है, बाल औरत की खूबसूरती और उसके हुस्न में दाखिल हैं और जिस तरह उसके जिस्म के दूसरे हिस्से पुरकाशिश होते हैं और उनकी ओर आकर्षण होता है, उसी तरह उनके बालों का मसला भी है, इसलिये उनका पर्दा आवश्यक है।

आदाब-ए-कुरआन

प्रश्न: क्या इस बात की इजाज़त है कि हम कुरआन मजीद को बस, ट्रेन, पार्क इत्यादि हर जगह पढ़ सकते हैं, खास कर ऐसी जगह जहां गैर मुस्लिम भी मौजूद हों? (मुहम्मद जुनैद, हैदरआबाद)

उत्तर: कुरआन का अदब और उसका एहतराम वाजिब है, और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसकी ओर ध्यान लगाना आवश्यक है। और ऐसी पब्लिक जगहों पर कुरआन के आदाब को ध्यान में रख पाना मुश्किल होता है। लिहाज़ा ऐसी जगहों पर धीरी आवाज़ में या बगैर आवाज़ के तिलावत करनी चाहिये।

બુક્રશા—એ—ક્રીક્રત

મુહમ્મદ સમાન સ્વલીપણ નદવી

હજરત આયેશા સે પૂછા ગયા કી ઘર મે રસૂલ (સ્વામી) કેસે રહતે થે? ફરમાયા: “જિસ તરહ તુમ લોગ રહતે હો, કોઈ ચીજ ઉઠાની હો તો ખુદ ઉઠાતો, રખની હોતી તો ખુદ રખતે, સબ સે પસન્દીદા કામ કપડે સીના થા, આપ જૂતા ગાંઠતે, કપડો મેં ખુદ હી પેવન્ડ લગાતે”

હજરત અનસ રજિઓ ફરમાતે હૈનું: “મૈને નૌ સાલ આપ (સ્વામી) કી ખિદમત કી, ન આપ ને મુઝે કભી બુરા ભલા કહા ના કભી મારા ના જિઙ્કા ના કભી મુજ્જ સે મુંહ બિસોર કર બાત કી, ઔર જબ આપ ને મુજ્જે કભી નહીં ડાંટા, અગર ઘર વાલે ડાંટતે ભી તો આપ ફરમાતે: છોડો જો બાત તકદીર મેં હોતી હૈ વહ હોકર રહતી હૈ”

લોગોં મેં સબ સે બઢ કર હુસ્ન સુલૂક કરને વાલે, સબ સે જ્યાદા શરીફ ઔર જબ તન્હાઈ મેં હોતે તો ચેહરે પર મુસ્કુરાહટ રહતી હૈ।

મજલિસ મેં બૈઠતે તો અક્સર ખામોશ રહતે, લોગ જ્યાદા ગુફ્તુગૂ કરતે તો આપ મુસ્કુરા દેતે। એક સહાબી ફરમાતે હૈનું કી આપ (સ્વામી) સે જ્યાદા ખામોશ કિસી કો નહીં દેખા।

દેહાત સે કુછ લોગ અલ્લાહ કે રસૂલ કી ખિદમત મેં હાજિર હુએ ઉન્હોને કહા કી આપ લોગ અપને બચ્ચોનો કો પ્યાર સે બોસા ભી દેતે હોય? ઇરશાદ ફરમાયા: “હાં” વો લોગ કહને લગે માગ ખુદા કી કસમ હમ તો બોસા નહીં દેતે, આપને ફરમાયા: જબ અલ્લાહ ને તુમ્હારે દિલોં સે મુહૂબત કા માદદા હી નિકાલ દિયા હૈ, તો મૈં ક્યા કરણું।

મદીને કી કોઈ બચ્ચી આતી હૈ ઔર આપકા હાથ પકડું કર લે જાતી હૈ આપ અપના હાથ ઉસકે હાથ સે ન ખીંચતે ઔર વો જહાં ચાહતી આપકો લે જાતી।

મદીને મેં એક દિન એક બુદ્ધિયા ખિદમત મેં હાજિર હુઈ આપ (સ્વામી) ઉઠતે હોય ઔર નિહાયત ગર્મજોશી સે ઉસકા સ્વાગત કરતે હોયાં। જલ્દી સે અપને ઘર જાકર એક અચ્છી સી ચાદર લાતે હોય ઔર ઉસકો જામીન પર બિછાતે હોય તાકિ વો ઔરત ઉસ પર બૈઠ સકે।

ઉસ ઔરત કે જાને કે બાદ હજરત આયશા ઇસ પુરજોશ સ્વાગત કા કારણ પૂછતી હૈ આપ ફરમાતે હોય: ખદીજા કે જામાને મેં યે હમારે ઘર આયા કરતી થી।

અપને સાથીયોં મેં સે કોઈ તીન દિન ગ્રાયબ રહતા તો ઉસકે બારે મેં પૂછતે અગર શહર સે બાહર રહતા તો ઉસકે લિયે

દુઆ કરતે। અગર મૌજૂદ રહતા તો ઉસસે મુલાકાત કરને ખુદ જાતે। ઔર અગર વો બીમાર હોતા તો ઉસકો દેખને જાતે।

રસૂલુલ્લાહ (સ્વામી) એક અન્સારી કે બાગ મેં દાખિલ હુએ જહાં એક ઊંઠ થા આપકો દેખતે હી ઉસકી આંખોં મેં આંસુ આ ગયે, ઔર ઉસને રોના શુરૂ કર દિયા। રસૂલુલ્લાહ (સ્વામી) ઉસકે કરીબ ગયે ઔર અપના હાથ ઉસકે મુંહ પર ફેરા, ફિર વો ખામોશ હો ગયા આપને પૂછા: ઇસ ઊંઠ કા માલિકા કૌન હૈ? એક અંસારી નૌજવાન ને કહા: મૈં હું ઐ અલ્લાહ કે રસૂલ આપને ફરમાયા: “જિસ જાનવર પર અલ્લાહ ને તુમ્હે એખિતયાર દિયા હૈ તુસકે સંબંધ મેં અલ્લાહ સે ડરતે કયોં નહીં? ઇસને મુજબસે શિકાયત કી હૈ કી તુમ ઉસે ભૂકા રખ કર બહુત કામ લેતે હોયાં।

ઓહદ કી જાંગ સે કુછ પહલે આપકે કુછ સાથી આપકી ખિદમત મેં હાજિર હોતે હોય ઔર કહતે હોય કી દુશ્મન હમારા રુખું કિયે હુએ હૈ ઔર હમારા નામ વ નિશાન મિટા દેને કે કરીબ હૈ! આપ (સ્વામી) ઉનસે ફરમાતે હોય: “મેરી રાય હૈ કી હમ લોગ જાંગ કે લિયે મૈદાન મેં ન નિકલે” વો કહતે હોય ઔર હમ યે ચાહતે હોય કી નિકલેં ઔર મૈદાન મેં ઉનસે મુકાબલા કરોં। આપ ઉનસે કુછ મિનટોં કા સમય માંગતે હોય | ઉનકે સામને સે થોડી દેર કે લિયે ચલે જાતે હોય ફિર ઉન નૌજવાનોં કી બાત રખતે હુએ ખુદ જાંગી લિબાસ પહન કર તશીફ લાતે હોયાં।

એક દિન એક દેહાતી ને દેહાત કે રૂખેપન મેં પૂછા: એ મુહમ્મદ યે માલ અલ્લાહ કા હૈ યા તેરે બાપ કા? ઉમર બિન ખત્તાબ લિયે ઉસકા કામ તમામ કરને કે લિયે આગે બઢે અલ્લાહ કે રસૂલ ને ઉન્હે યે કહકર રોકા છોડો ઉમર કહને વાલે કો બાત કહને કા હક હોતા હૈ।”

ખિદમત મેં એક વ્યક્તિ હાજિર હુએ ઔર બાત કરતે હુએ ઘરાને લગા તો ઇરશાદ હુએ “આરામ સે મૈં કોઈ બાદશાહ નહીં હું મૈં તો બસ કુરોશ કી એક ખાતૂન કા બેટા હું જો સૂખે ગોશ્ટ કે ટુકડે ખાયા કરતી થી।

ફરમાયા કરતે થે મેરા ઔર તુમ્હારા હાલ ઉસ વ્યક્તિ કી તરહ હૈ જિસને અલાવ રોશન કિયા, પતિંગે ઔર પરવાને આ આકર ઉસમે ગિરને લગે | ઔર વો ઉન્હે દૂર કિયે જા રહા હૈ | મૈં ભી તુમ્હારી કમર પકડ—પકડ કર તુમ્હે આગ સે બચા રહા હું | લેકિન તુમ હો કી મેરે હાથ સે છૂટે જા રહે હો |



मुसलमानों में शादियों का रिवाज इस्लाम के बताए हुए रास्तों से हट कर होने लगा है और बहुत सी अनावश्यक बल्कि ज़ालिमाना बातें इसमें शामिल कर दी गयीं हैं और ज़रूरी कर दी गयी हैं उनको दूर करने की आवश्यकता है।

मुसलमानों की शादी के लिये सबसे पहले आवश्यक है कि फिजूल ख़र्ची न हो, दूसरे ये कि उसमें मेहर को महत्व दिया जाए जो शरीअत के आदेशानुसार है, उसको अदा करने की चिन्ता की जाए, अस्ल में तो बिना देर किये कर दी जाए और अगर जल्दी न हो सकती हो तो उसको अदा करने की चिन्ता की जाए सिवाए इसके कि बीवी खुद इसे माफ कर दे, तीसरे ये बीवी से जहेज़ या किसी तोहफे के लाने की मांग न की जाए, चौथे ये कि बीवी के सारे ख़र्च शौहर बर्दाशत करे और उसकी आवश्यकता व राहत ध्यान रखे।

लेकिन देखने में आ रहा है कि शादियों में बेजा खर्च किया जाता है जिसकी वजह से लड़की के मां-बाप बहुत ज्यादा परेशान होते हैं। और फिर बीवी से जहेज़ लाने की अनुचित मांग की जाती है जिसके कारण से मां बाप के लिये बहुत मुसीबत खड़ी हो जाती है और वो उसके लिये कर्ज लेने पर मजबूर हो जाते हैं और नाजाएज़ तरीके अपनाने पर मजबूर हो जाते हैं जो कि शरई लिहाज़ से बिल्कुल नाजाएज़ है।

हर व्यक्ति को ये मसला समझ लेना चाहिये कि जो भी माल गैर शरई एतबार से या किसी तरह का दबाव डाल कर हासिल किया गया हो वो शरीअत में जाएज़ व हलाल न होगा। इसी तरह जो जहेज़ दबाव डालकर हासिल किया जाएगा वो भी हराम होगा।

आम तौर से जहेज़ के नाम पर जो बात मशहूर है वो ये कि लड़कों या उसके सरपरस्तों की तरफ से लड़की वालों से बहुत सा सामान जैसे नक्कद रूपया, सोना, गाड़ी इत्यादि की मांग की जाती है। शरीअत के अन्दर इसकी कोई गुन्जाइश नहीं। बल्कि लड़की के मां-बाप अगर गरीब घरानों के होते हैं तो वो हमेशा इसी चिन्ता में रहते हैं कि लड़की की शादी मामूली जहेज़ कुबूल करने वाले या सिरे से जहेज़ न लेने वाले लड़के से हो जाए, कई बार लड़के वालों की तरफ से जो मांगे

होती हैं उसको सुनकर ही एक शरीफ इन्सान शरमा जाता है।

शिक्षा से दूरी, शरीअत से अनभिज्ञता के कारण कई जाहिल लोग इस हद तक नीचे गिर जाते हैं कि लड़की के जहेज़ न लाने पर लड़की पर जुल्म किया जाता है, मारा-पीटा जाता है, उसको अपने मैके वापस कर दिया जाता है और कई इन्सानियत से गिरे इस हद तक आगे बढ़ जाते हैं कि लड़की को जान से ही मार देते हैं। इस जहेज़ की न इस्लामी शरीअत में कोई गुन्जाइश है और न ही दूसरी शरीअतों में।

इन्सानी हमदर्दी का भी यही तकाज़ा है कि देखना चाहिये कि जहेज़ मांगना कितनी मुसीबतों का कारण बन रहा है। लड़की वाले इसके कारण से कर्जदार हो जाते हैं और अगर जहेज़ न दे सके तो अपनी लड़की को घर में बिठाना पड़ता है। शादी नहीं हो पाती। ये बातें बहुत नाजाएज़ हैं और अल्लाह के गुस्से का कारण हो सकती हैं। इस समय स्थिति ये बन गयी है कि पति के इच्छानुसार जहेज़ की मांग पूरी न होने पर बीवी को कष्ट दिया जाता है, कभी इसको जाने से ख़त्म कर दिया जाता है। वरना तलाक़ देकर उससे पीछा छुड़ा लिया जाता है। इस तरह पारिवारिक संबंध में जहेज़ एक लानत बन गयी है। इसको दूर करने की आवश्यकता है। इसलिये जहेज़ की मांग की लानत से समाज को बचाना अक्ल वालों का काम है और इसके खिलाफ हर व्यक्ति को सीना तान कर खड़े होने की आवश्यकता है।

आज भारत में विशेषतयः हमारे समाज में जहेज़ एक ऐसा नासूर बन गया है जो एटमी हथियार से अधिक ख़तरनाक साबित हो रहा है आज हमारी बेटियां इस्लामी शरीअत का नाम लेने वालों से ये कह रही है कि काश हमारी शरीअत किताबों और तक़रीरों के बजाए अमल में आ जाती।

अस्ल में औरत अल्लाह की तरफ से दिया गया वो हसीन तोहफा है जिसने इन्सानी ज़िन्दगी को आला मकाम बख्शा, इसी औरत के दम से नज़ारों में खूबसूरती और कशीश पैदा हुई। इसी मासूम कली ने हज़रत आदम अलै० की ज़िन्दगी से खौफ व दहशत को दूर किया, मगर इन सभी बातों के बावजूद जुल्म व सितम का इतिहास गवाह है कि ज़माने में

जितने जुल्म किये गये वो अधिकतर औरत पर ही किये गये।

आज भी इन मासूम लड़कियों पर जुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं। ग्रीब घरानों की लड़कियों पर खुदा की ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद तंग हो रही है। पूरी दुनिया में ये बात खुली हुई है कि जिस घर में लड़की जवानी की दहलीज़ पर कदम रखती है उसी समय से मां-बाप की नींदे हराम हो जाती हैं। जिन्दगी का हर लम्हा सांप बनकर डसने लगता है। एक ओर लड़की की उठती हुई जवानी है तो दूसरी ओर वहशी भेड़ियों की उठती हुई निगाहें होती हैं तो तीसरी ओर पड़ोसियों की कानाफूसी होती है। मां-बाप इस गुलाब के फूल को सजाने के लिये जब किसी लड़के की तलाश करते हैं तो जहेज़ की मांग उनके इरादों को वहीं कुचल कर रख देती है।

किसी ने क्या खूब कहा है:

पहले देखा था कि बाज़ारों में सनम बिकते हैं
आज क्यों शर्म नहीं आती कि हम बिकते हैं
हर शहर हर गली चर्चा जहेज़ का
दुनिया में ये रिवाज है अच्छा जहेज़ का
ये कैसा माजरा है हज़रात देखिये
दामाद मांगता है खैरात देखिये
मेरे भाईयों! महान वो लोग हैं जो कहते हैं कि हमे जहेज़
नहीं चाहिये, अल्लाह ने जो कुछ दिया है वो बहुत है।

किसी शायर ने खूब कहा है:

ये जिन्दगी दुनिया में कनाअत के लिये है
इन्सान समझता है कि दौलत कि लिये है

आज हिन्दुस्तान में ये ग़लत रिवाज चल पड़ा है कि
लोग अपनी बीवियों का मेहर तो अदा नहीं करते जो उनका
शर्ई हक़ है। मगर एक गैर शर्ई मांग को शरीअत और कानून
से ज्यादा बड़ा दर्जा दे चुके हैं और इसके भयानक प्रभाव से
आज ख़ानदान टूट रहे हैं और समाज तबाह हो रहा है। जहेज़
आज समाज का नासूर और तबाही का पहचान बन चुका है।
अतः इसको जितनी जल्दी हो समाप्त करके प्राकृतिक
व्यवस्था और अल्लाह के कानून की पाबन्दी करनी चाहिये
और इस काम में हर प्रकार की फ़िजूल ख़र्चियां बिल्कुल बन्द
करके सीधे-साधे तरीके से निकाह करना चाहिये। क्योंकि
फ़िजूल ख़र्ची करने वाले शरीअत की नज़र में शैतान के भाई
हैं। माल व दौलत अल्लाह की अमानत है जिसके ग़लत ख़र्च
का हिसाब देना पड़ेगा। आज अमीरों की ने प्रसिद्धि एवं
धार्मिक नुमाइश में ख़र्च कर करके गरीबों का जीना दूधर कर
दिया है। लिहाज़ा फ़िजूल ख़र्ची और नुमाइशी प्रदर्शनों पर
रोक लगाना भी ज़रूरी है।

हम जिस देश में रहते हैं यहां औरते पुराने ज़माने से
बहुत पीड़ित एवं मजबूर रहीं हैं। उन्हे मां-बाप पति की
जाएदाद से कोई विरासत नहीं मिलती और हिन्दुस्तानी कानून
के अनुसार अब औरतें विरासत की हक़दार हैं। लेकिन
हकीकत ये है कि अमली तौर पर अब भी हिन्दु समाज में
औरतों को विरासत नहीं दी जा सकती। इस परिदृष्टि में हिन्दु
धर्म और हिन्दु समाज शुरू से जहेज़ रहा है। इस्लाम में
लड़कियों को अपने मां-बाप की जाएदाद और बीवी को अपने
पति का हिस्से से अवश्य मिलता है। और कई बार वो दूसरे
हिस्सेदारों से भी विरासत पाती हैं। इसलिये शरीअत में जहेज़
या लड़के वालों की तरफ से मांग का कोई विचार नहीं।
लेकिन बदकिस्मती से मुसलमानों ने अपने हिन्दु भाईयों से ये
दोनों रस्म ले लीं। एक जहेज़ की दूसरे लड़कियों को विरासत
न देने की। मानों जो चीज़ जाएज़ थी उसे नाजाएज़ और
हराम थी उसे हलाल कर लिया। और अब हिन्दु समाज की
तरह मुसलमानों में भी इस बोझ के कारण खुदकुशी के वाक्ये
पेश आने लगे हैं। इसलिये अब आवश्यकता इस बात की है
कि कौम व मिल्लत के दर्दमन्द लोग जागरूक होकर इस
लानत को समाज से ख़त्म करें।

ऐ मिल्लते इस्लामिया के गैरतमन्द नौजवानों! ऐ कौम व
मिल्लत के दर्दमन्दों! ये ग़फ़लत व लापरवाही कब तक,
औरतों के साथ जुल्म व सितम की इन्तिहा हो चुकी है। अब
तक जहेज़ की वजह से कितनी औरतें जल कर ख़ाक हो चुकी
हैं, और न जाने कितनी औरतें जलने वाली हैं, इस जहेज़ के
कारण पैदा होने वाली बिदअतें व खुराफ़ातें और नित नये
फ़ितनों के कारण समाज की व्यवस्था तितर-बितर और लोगों
का सुकून व इत्मिनान ख़त्म हो चुका है। अब समय आ गया है
कि हम सब सकल्प लें कि खुद भी इस लानत से बचेंगे और
दूसरों को भी बचाने की कोशिश करेंगे। बयान व नसीहत,
अख़बार व किताबें और इल्मी कदमों के द्वारा जहेज़ के हराम
होने और उसकी ख़राबियों व तबाहकारियों को लोगों के
दिमागों में बिठाने का प्रयास करेंगे। हम अपने समाज में जहेज़
विरोधी कमेटी की स्थापना करके इस इन्सानियत सोज़ रस्म
का खात्मा करेंगे और जो लोग जहेज़ मार्गें उनका बायकाट
करेंगे। अगर हम अब भी न जागे तो इस जहेज़ की बढ़ती हुई
तबाहियों को नहीं रोक सकेंगे और आने वाली नस्ले हमारे इस
समय की मामूली सी लापरवाही का ख़ामियाज़ा सदियों तक
झेलती रहेंगी, जिससे छुटकारा पाना अंसम्भव नहीं तो बहुत
कठिन हो जाएगा।

काश आये वो भी दिन की हर नौजवान कहे
हमको नहीं है ज़रूरत जहेज़ की



भारत के मुसलमानों की

राजनीतिक समस्याएं एवं उनका हल

भारत की स्वतन्त्रता को साठ वर्ष से अधिक का समय बीत चुका है। इस लम्बे अर्स में भारतीय राजीनीति में ज़बरदस्त क्रान्ति बरपा हुई। सदा से स्वयं को सम्मानित एवं वर्गीय बन्धनों से स्वतन्त्र मानने वाला वर्ग सत्ता पर काबिज होने के प्रयास करता रहा जिसके लिये उसने हर प्रकार के हथकन्डे भी अपनाये। वहीं देश का वो वर्ग जो हमेशा से पीड़ित, दलित और अछूत एवं ध्यान न देने योग्य समझा जाता था उसने एक मजबूत पोज़ीशन हासिल करने बहुत हद तक कामयाबी हासिल की। आज राजनीति के मैदान में इसकी मौजूदगी को नज़रअन्दाज नहीं किया जा सकता बल्कि वो उच्च वर्ग को टक्कर देने की योग्यता रखता है और देश के किसी भी महत्वपूर्ण व राजनीतिक फैसले में इसको नज़रअन्दाज़ करना आसान नहीं। लेकिन इस पूरी मुद्रत में भारत के पच्चीस करोड़ मुसलमान इस पोज़ीशन में नहीं आ सके कि राजनीति के मैदान में वो खुद को मनवा सकें।

ये एक कड़वी सच्चाई है कि हज़ार मुसीबतों और फ़सादों से गुज़रने के बावजूद मुसलमानों में एकता का कोई प्रयास कारगर सिद्ध नहीं हो सका है और ये कौम लगातार बिखराव व फूट का शिकार होती रही। जिसका एक आधारभूत कारण किसी विश्वस्नीय संस्था या जमाअत का न होना है। ये कौम साठ सालों से एक बेलौस, वास्तविकता से संबद्ध और निपुण शासक से वंचित रही है। जिसके कारण ये कौम समस्याओं के मङ्झधार में बिल्कुल अकेले रह गयी है और फिर इसकी लाचारी, बेचारगी और फूट का लाभ हर राजनीतिक दल ने उठाया।

भारत के मुसलमान पिछले साठ सालों से विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के झन्डे ढूँढते रहे, हर सेक्युलर पार्टी को उन्होंने अपनी नजात का साधन समझा और उसकी लय में लय मिलाने का प्रयास किया। “हिन्दुत्व” और फिरका परस्त पार्टियों की उत्तेजना की हवा उखाड़ करके उन पार्टियों ने अपने राजनीतिक लाभ की पूर्ति तो कर ली, लेकिन इसके परिणाम में उन सेक्युलर पार्टियों ने मुसलमानों को क्या दिया इसका एक अन्दाज़ा सच्चर कमेटी की रिपोर्ट से भी लगाया जा सकता है। जिसकी तफ़सील में न जाते हुए इतना समझना काफ़ी है कि आज इस देश में मुसलमानों की हैसियत “बाहरी तत्व” से कम नहीं, शासन और पुलिस में उनकी संख्या अत्यधिक कम है।

न्यायपालिका में भी उनकी नुमाइन्दगी न के बराबर है, नौजवानों को बेरोज़गारी के साथ—साथ नफरत और कराहत का भी सामना करना पड़ता है। देहाती क्षेत्रों में मुसलमानों की स्थिति बड़ी दयनीय है। 94 प्रतिशत मुसलमान सरकारी अनाज से वंचित रहते हैं, 3.2 प्रतिशत मुसलमानों को ही सब्सिडी का लाभ पहुंचता है, शिक्षा व्यवस्था की हालत और भी ख़राब है, देहातों में 60 प्रतिशत और शहरों में 54.6 प्रतिशत बच्चे स्कूल गये ही नहीं, राज्यों की सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों के दस्तों में मुसलमानों की संख्या बहुत ही कम है। और सबसे हैरानी की बात ये है कि जेलों में मुसलमान कैदियों का अनुपात सबसे अधिक है। महाराष्ट्र में 10.6 प्रतिशत मुसलमान आबाद हैं मगर यहाँ की जेलों में 32.4 प्रतिशत मुसलमान कैद हैं। दिल्ली में 1.7 प्रतिशत मुसलमान हैं मगर सलाखों के पीछे लगभग 27 प्रतिशत मुसलमान जेल के कष्ट झेलने पर मजबूर हैं। इस पर ये कि उनकी देशभक्ति और देश से वफादारी पर भी सवालिया निशान लगता रहता है। लेकिन चुनाव निकट आते ही सारी हमर्दियां मुसलमानों से जुड़ जाती हैं। और फिर वो पार्टी चाहे सत्ता की हो या विपक्ष की मुस्लिम वोट के सहारे ही राजनीति करने पर मजबूर हैं।

हालात को देखते हुए एक सवाल ये उठता है कि आखिर कब तक मुसलमान इन पार्टियों के बादों और दिलासों के सहारे जीत रहेंगे? साठ साल से कौम इस इन्तिज़ार में है कि कोई मसीहा आयेगा और उसका राजनीतिक मार्गदर्शन करेगा, लेकिन ये ख़बाब हमेशा ख़बाब ही रहा। अब भी इससे इनकार नहीं कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों की राजनीतिक बेवज़नी को ख़त्म करने और उनको राजनीति के मैदान में अधिकार वाला बनाने के लिये स्वतन्त्रता के बाद से अब तक बहुत सारी कोशिशों की जा चुकी हैं। देश के बुद्धिजीवियों, राजनीतिक शासक, और उलमा—ए—कराम ने भी महत्वपूर्ण सेवाएं की हैं। लेकिन उनका उचित परिणाम नहीं निकल सका।

इसका एक आधारभूत कारण ये था कि भारतीय मुसलमानों ने ये समझ रखा है कि उनकी सारी समस्याएं दूसरों की पैदा की हैं और वो खुद मासूम हैं। उनकी शिक्षा, अर्थव्यवस्था, सामाजिक और धार्मिक हीनता और उनकी अवनति की ज़िम्मेदार शासन और फिरकापरस्त पार्टियां ही

हैं। शिकायतों के इन द्वेर को लेकर मुसलमान पिछले साठ बरसों से आंसू बहाते रहे और सीना पीटते रहे। जबकि भारत के दूसरे सारे अल्पसंख्यक बदल गये लेकिन मुसलमान इस देश में अपने प्रजातन्त्र और मूलभूत अधिकारों को भी प्राप्त करने की योग्यता नहीं उत्पन्न कर सके। यद्यपि हर छोटे-छोटे अन्तराल के बाद देश के भिन्न भिन्न कोनों से ये आवाज़ अवश्य उठती है कि बदलते हुए हालात में मुसलमानों की समस्याओं को हल करने के लिये उनका एक राजनीतिक अस्तित्व होना आवश्यक है। इसलिये ज़रूरी है कि मुसलमानों की एक मज़बूत राजनीतिक पार्टी हो।

मुसलमानों की राजनीतिक पार्टी को लेकर इधर कई दशकों से मुसलमान इस उलझन में गिरफ्तार हैं कि उनकी राजनीतिक पार्टी होना लाभकारी है या नहीं? और फिर इस विषय को लेकर मुसलमान दो अलग-अलग वर्गों में बंट गये। एक वर्ग का कहना है कि साठ साल के लच्चे अनुभव के बाद एक राजनीतिक पार्टी का होना आवश्यक है, जब देश का वो वर्ग जो हर प्रकार से पसमान्दा और दुष्कारा हुआ था वो अपनी पार्टी बनाकर शासन में शामिल हो सकता है तो मुसलमानों का इसे असंभव समझना किसी भी प्रकार की बुद्धिमानी नहीं है। जबकि अब तक किसी भी धर्मनिरपेक्ष पार्टी ने गम्भीरता से मुसलमानों की समस्या पर विचार किया ही नहीं, बल्कि वो उनका शोषण ही करते रही है।

दूसरे वर्ग का कहना है कि मुसलमानों की अलग राजनीतिक पार्टी की आवश्यकता नहीं है बल्कि मुसलमानों को देश में मौजूद सेक्युलर पार्टियों का साथ देना चाहिये। राजनीतिक केन्द्र के लिये हालात मुसलमानों के हक़ में नहीं है। और उन्हे इस बात का भी ख़तरा है कि अगर मुसलमान राजनीतिक तौर पर एक होंगे तो गैर मुस्लिमों में भी एकता पैदा हो सकती है जो मुसलमानों के लिये और अधिक हानिकारक सिद्ध होगी।

इस बात में बुनियादी सवाल ये है कि क्या किसी राजनीतिक पार्टी की स्थापना से मुसलमानों के मसले हल हो सकते हैं। जबकि पहले हम इसका अनुभव कर चुके हैं। 1966 ई0 में “मुस्लिम मजलिस—ए—मुशावरत” की स्थापना इसी चिन्ता का परिणाम थी। मुस्लिम मजलिस—ए—मुशावरत ने 1967 ई0 के चुनाव में अहम रोल अदा किया था। दो साल के छोटे से अर्से में मुशावरत ने मुसलमानों का वो विश्वास प्राप्त कर लिया था कि मुशावरत के राजनेताओं ने जो फैसला किया भारत के सारे मुसलमानों ने उस पर सहमति प्रकट की। लेकिन अफसोस की बहुत जल्द मुसलमानों की ये राजनीतिक पार्टी फूट व बिखराव का शिकार हो गयी।

कुछ सालों पहले “मिल्ली पालिटिकल फॉरम” बनाया गया

था लेकिन ये फॉरम भी मनचाही कामयाबी प्राप्त न कर सका, इसका रोल केवल काग़जी रहा। इल्मी स्तर पर ये फॉरम नाकाम साबित हुआ। इस तरह की और भी बहुत सी राजनीतिक पार्टियां बनी लेकिन वो कुछ लोगों के बीच ही मौजूद रहीं। शब्दी अना, राजनीतिक अज्ञानता, राजनीतिक बेवज़नी के धारों में वो कब बह गयीं किसी को एहसास भी न हुआ।

इन बातों के बयान करने का मक्क्सद ये है कि राजनीतिक जमाअत की स्थापना पर सारा ध्यान लगाना न केवल राजनीतिक दूरअन्देशी के विपरीत है बल्कि रही सही साख़ा को भी खो देने का ख़तरा है। क्यों कि मुसलमानों की भावनात्मक प्रकृति, उनकी गैर मुस्तिकल मिज़ाजी, आपसी रस्साकशी और सबसे बढ़कर उनकी कौम के स्तर से सियासी सूझ-बूझ का तकाजा भी यही है। और सारी उठापटक के बाद अगर कोई राजनीतिक पार्टी बन भी जाती है तो क्या केवल राजनीतिक पार्टी के बन जाने से मुसलमानों के सारे मसले हल हो जाएँगे? क्या इसके ज़रिये मुसलमानों का मिज़ाज बदल जाएगा? क्या इसके कारण उनके आपकी मतभेद समाप्त हो जाएँगे? और क्या एक राजनीतिक पार्टी के कारण शिक्षा के प्रति जागरूकता, दीनी भाव, और आखिरत का शौक पैदा हो सकेगा? इस तरह के न जाने कितने सवाल हैं जो शायद सवाल ही बने रहेंगे!!

मुसलमानों के अधिकतर मसले वो हैं जिनका संबंध उनकी अपनी जात से है। शिक्षा में पिछड़ापन, गरीबी, बिखराव, मज़बूत शासक वर्ग की कमी, समाज के उनके वज़न का कम होना, इस तरह के दूसरे मसलों का बुनियादी कारण दीनी शिक्षा और दीनी मिज़ाज से महरूमी है। मुसलमान अगर इस और ध्यान दें तो इस तरह के मसले पैदा ही न हों।

रहे वो मसले जिनका सीधा संबंध शासन से है। जैसे वक़्फ के मसले, सरकारी विभागों में नुमाइन्दगी, रोज़गार की उपलब्धी, उनके साथ सौतेला व्यवहार, गणतन्त्र और संविधान के मूलभूत अधिकारों से वंचित होना तो इन समस्याओं के हल के लिये सबसे पहले खुद मुसलमानों को गम्भीर होना होगा, व्यक्तिगत लाभ से उठकर कौम के लाभ को सामने रखना होगा, और एक मज़बूत कार्यप्रणाली तैयार करके कोशिश करनी होगी। आज उनके सामने दर्जनों समस्याएं हैं लेकिन इन समस्याओं में सबसे बड़ी समस्या ये है कि आज तक इनके संबंध से ये निश्चित नहीं किया जा सका कि कौन सी समस्या आधारिक और महत्वपूर्ण है, और फिर उन पर पूरा ध्यान दिया जाता, होता ये है कि एक साथ सारी समस्याओं की एक लम्बी लिस्ट प्रस्तुत कर दी जाती है, लेकिन काम का आरम्भ कहां से किया जाए ये तय नहीं हो पाता और फिर परिणामस्वरूप समस्याओं की गुत्थी और उलझती जाती है।

इस्लामी अख़्लाक

कुन्तीन व मुज्जत की गोशानी में

नर्मी का बर्ताव

आप (स०अ०) ने नर्मी का बर्ताव करने का हुक्म भी दिया है। अल्लाह के रसूल (स०अ०) को स्थिताब होता है: (अनुवाद: तो अल्लाह की रहमत की वजह से तुम उनके लिये नर्म दिल हुए और अगर तुम मिज़ाज के अख्खड़ और दिल के सख्त होते तो ये लोग तुम्हारे पास से तितर बितर हो जाते)

आंहज़रत (स०अ०) ने इरशाद फ़रमाया कि जो नर्मी से महरूम रहा वो भलाई से महरूम रहा और फ़रमाया कि तीन विशेषताएं जिस व्यक्ति के अन्दर होंगी खुदा अपना साया उस पर फैलाएगा और उसको जन्त में दाखिल करेगा। कमज़ोर के साथ नर्मी करना, मां—बाप पर मेहरबानी करना, और गुलाम पर एहसान करना। (तिरमिज़ी)

नर्मी व नर्म व्यवहार के साथ तवाज़ो व खाकसारी की भी तालीम दी और अल्लाह के रसूल (स०अ०) ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति खुदा के लिये खाकसारी करता है, खुदा उसको बुलन्द करता है, हज़रत लुक़मान की नसीहत कुरआन मजीद ने ज़िक्र की है, इरशाद होता है:

(अनुवाद: और लोगों से बेख्वी न करो और ज़मीन पर इतरा कर न चलो क्योंकि अल्लाह तआला इतराने वाले, शेख्वी बघारने वाले को पसन्द नहीं करता और बीच की चाल अपनाओ और किसी से बात करो तो धीरे से बोलो क्योंकि बुरी से बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ है)

अल्लाह के रसूल (स०अ०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझ पर वही भेजी कि खाकसारी अपनाओ ताकि कोई किसी पर जुल्म न करे और कोई किसी के मुकाबले में फ़ख़ न करे। (अबू दाऊद)

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी